वेद विज्ञान अनुसंधान की ओर

- बढ़ते कदम

वेद

महर्षि दयानन्द सरस्वती

सर अल्बर्ट आइन्स्टीन

-: प्रकाशक :-

श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास, वेद विज्ञान मन्दिर

(वैदिक एवं आधुनिक भौतिक विज्ञान शोध संस्थान)

भागल-भीम, वाया-भीनमाल, जिला-जालोर (राज.) M. 09829148400

☎ 02969 - 220579 ई मेल - swamiagnivrat@yahoo.com

न्यास के संरक्षक

पूज्यपाद आचार्य स्वदेशजी महाराज
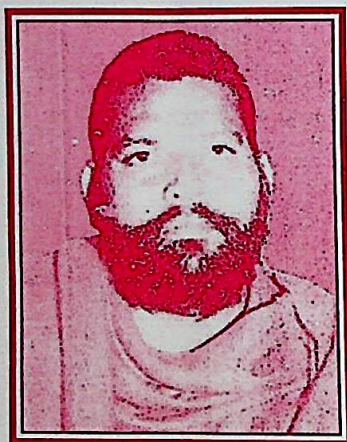
आचार्य श्री गुरू विरजानन्द आर्ष गुरूकुल वेद मन्दिर

वृन्दावन मार्ग, मथुरा (उ.प्र.)

दूरभाष : 0565 - 2406431

प्रथम बार 1000 प्रतियां — 18 जून 2008

ज्येष्ठ शुक्ला पूर्णिमा वि. २०६५ — बुधवार

सहयोग राशि : श्रद्धा-सामर्थ्य के अनुसार सहयोग करें व करावें।

10.2

॥ ओ३म् ॥

वेद विज्ञान शोध की आवश्यकता

लेखक : आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

आदरणीय सज्जनो व देवियो,

सृष्टि के प्रारम्भ से ही मानव जाति वैदिक धर्म को ही एक मात्र धर्म के रूप में मानती आयी है । भारतीय व ऋषि-देव-परम्परा इस बात को मानती है कि महाभारत काल तक विश्व में सत्य सनातन वैदिक मत के अतिरिक्त अन्य कोई मत इस भूमण्डल में नहीं था । महाभारत के युद्ध से इस देश व विश्व को भारी क्षति हुई । इस देश की विद्या व धर्म की परम्परा छिन्न-भिन्न हो गयी । जहाँ इस देश में ऋषियों के ग्रन्थों में मनमाने प्रक्षेप (मिलावट) होने लगे, अनेक ग्रन्थ जैसे प्रचलित पुराण आदि महर्षि व्यासदेवजी महाराज जैसे पावन महर्षियों के नाम से बनाकर प्रसिद्ध किये गये। वेद के नाम पर मांस, मदिरा, छुआछूत, नारी उत्पीड़न, व्यभिचारादि पापों को धर्म बताया जाने लगा । दूसरी ओर कुछ समाज सुधारकों, परिस्थितियों के द्वारा प्रताड़ित महानुभावों वा चतुर चालाक लोगों द्वारा पारसी, यहूदी, ईसाई, इस्लाम, जैन, बौद्ध, सिख आदि विभिन्न मत-पन्थों का विश्व में प्रचलन हुआ । वैदिक धर्म विकृत होकर अनेक पापों का गढ़ बन गया। उपर्युक्त सम्प्रदाय इस विकृति की प्रतिक्रिया में ही बने थे । उस समय अविद्या, अन्धकार की गहनता से कोई भी ऐसा विद्वान् नहीं बचा था जो वेद व आर्ष परम्परा के शुद्ध स्वरूप को संसार के समक्ष प्रस्तुत करता । दैव योग से आद्य शंकराचार्यजी महाराज ने वेद विद्या व वैदिक संस्कृति के उद्धार का बीड़ा उठाया परन्तु मात्र 32 वर्ष की अल्पावस्था में यह शास्त्रार्थ योद्धा भी किसी पापी के द्वारा विष देने से इस संसार को छोड़कर चल बसा ।उनके असमय चले जाने से उनका निजी मत भी उनके शिष्यों को स्पष्ट नहीं हो पाया । उनके शिष्य स्वयं को ब्रह्म तथा जगत् को मिथ्या मानकर ऐसे वैरागी बने कि देश, समाज, परिवार, सबको भूल गये तो दूसरी ओर जैन व बौद्धों की मिथ्या अहिंसा ने देश के राजाओं को निरस्त्र व कायर बना दिया । एक ईश्वर को त्यागकर अनेक तीर्थंकरों, देवी-देवताओं की कल्पना करके ईश्वर पूजा को त्यागकर महापुरूषों के चित्रों की पूजा चल पड़ी । ब्रह्मा, मनु, महादेव, विष्णु, इन्द्र, मार्कण्डेय, नारद, वशिष्ठ, विश्वामित्र, भरद्वाज, वाल्मीकि, गौतम, कपिल, कणाद, पतंजलि, व्यास, जैमिनी, पाणिनी, यास्क, याज्ञवल्क्य, राम, कृष्ण जैसे महापुरूषों की परम्परा को मिटाकर नई-नई पूजा पद्धतियों, विचारधाराओं ने इस विश्व मानव समाज को बांट दिया। वेदों

का स्थान अनेक कुग्रन्थों ने ले लिया । वेद का नाम तो साधुवेश धारी व कथावाचक पण्डित लेते परन्तु वेद को पढ़ने से दूर रहते थे । पुनरपि वेद पाठ की उज्ज्वल परम्परा वाले ब्राह्मणों ने वेद संहिताओं को कंठस्थ करके आपातूकाल में भी वेद को सुरक्षित रखा । महाभारत के पश्चात् उत्पन्न हुये अनेक मत पन्थों में से कुछ मत तो वेद के विरोध में चले तो अन्य वेद के समर्थन में । दुःख इस बात का है कि इन दोनों ही विचार वालों को वेद का सम्यक् ज्ञान नहीं था । आर्य नाम को भूलकर हिन्दू नाम प्रचलित हुआ । अवैदिक सम्प्रदाय तो अपने-अपने आधार ग्रन्थ पर दृढ़ता से से एक मत हो गये परन्तु यह आर्य जाति जो हिन्दू नाम से जानी जाने लगी, ने वेद को पूजा की वस्तु मानकर अलमारी में रख दिया और गीता, भागवत, रामचरितमानस आदि को ही अपना आधार ग्रन्थ मानकर खण्ड-खण्ड हो गई । इसका कोई एक धर्म ग्रन्थ नहीं रहा । कोई एक उपास्य देव नहीं रहा, कोई एक गुरू मन्त्र व अभिवादन नहीं रहा । यद्यपि गीता आदि सभी ग्रन्थों में वेद की महिमा का विशद वर्णन है परन्तु कोई भी पण्डित वेद को पढ़ना तो दूर उसे आधार ग्रन्थ मानने का भी साहस छोड़ बैठा । यद्यपि भागवत पुराण में लिखा है कि भागवत का कथावाचक वेद का ज्ञाता होना चाहिये परन्तु आज अनाड़ी लोग भागवत की कथायें कर रहे हैं । वे भागवत की नहीं बल्कि अपने किस्से कहानी सुनाते दक्षिणा बटोरते हैं । कोई श्रोता भागवत पढ़ा होता नहीं । फिर भागवत में क्या-क्या भरा है, इस पर हम इस हिन्दू समाज से निवेदन करेंगे कि वह स्वयं पढ़कर देखे, फिर निर्णय करे कि क्या इसे पढ़ना चाहिये या नहीं?

सौभाग्य से लगभग 180 वर्ष पूर्व इस देश में महर्षि दयानन्दजी सरस्वती का जन्म हुआ। उन्होंने हजारों वर्ष पश्चात् इस बात को समझा कि महाभारत के पश्चात् इस मानव जाति की जो क्षति हुई है, इस आर्य्यावर्त (भारत) देश का जो पतन हुआ है, उसका एक मात्र कारण वेद को भुला देना है । इसलिये उन्होंने ऋषि-मुनियों की घोषणा को पुनः संसार के समक्ष गुंजाया कि वेद सब सत्य विद्याओं का ईश्वरीय ज्ञान रूपी पुस्तक है । इसे पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना प्रत्येक आर्य (श्रेष्ठ-संस्कारी) मानव का परम धर्म है । उन्होंने सारी मानव जाति को वेद के नाम पर जोड़ने का प्रयास किया । वेद व ऋषियों के ग्रन्थों में जो विकृति आ गयी थी अथवा मिथ्या अर्थ किये गये थे, उन्हें दूर वा शुद्ध करके प्राचीन वैदिक आर्ष परम्परा को पुनर्जीवित किया । उन्होंने एक ईश्वर 'ओ३म्' एक धर्म 'वैदिक धर्म' एक धर्म ग्रन्थ 'वेद' एक नाम 'आर्य' एक गुरुमन्त्र 'गायत्री मन्त्र' एक अभिवादन'नमस्ते' इस मानव एकता के छः सूत्रों को पुनः संसार के समक्ष रखा लेकिन स्वार्थी व दुष्ट जनों ने उन्हें भी विष देकर इस संसार से विदा कर

दिया । उनके जाने के पश्चात् उनके उत्तराधिकारी आर्य समाज ने अनेक राष्ट्रिय-सामाजिक सुधार के कार्य किये। स्वराज्य प्राप्त करना एक महत्वपूर्ण कार्य किया, परन्तु स्वतन्त्र भारत में आर्य समाज एवं ऋषि दयानन्द सरस्वती की भावनाओं को समझने का आज तक किसी ने कोई प्रयास नहीं किया। स्वार्थ, दुराग्रह, मिथ्या प्रतिष्ठा की चाह ने आज तक वैदिक सत्य स्वरूप का गला दबा रखा है, ऋषि, देव व अन्य महापुरूषों की परम्परा को अन्धविश्वास, पाखण्ड, पाप, अविद्या, चमत्कारवाद आदि के बन्धनों में बांध रखा है, सत्य सनातन वैदिक धर्म को मिटाकर पाखण्ड प्रधान मतों ने सनातन धर्म का आवरण ओढ़कर करोड़ों आर्यों (हिन्दुओं) को भ्रमित कर रखा है, तो दूसरी ओर अवैदिक (विदेशी) मत तेजी से बढ़कर इस देश व वैदिक धर्म को नष्ट व पराधीन करने का दुष्ट प्रयास करने में पूर्ण पुरूषार्थ कर रहे हैं, परन्तु वेद का नाम मात्र लेने वाले स्वयं वेद से दूर पाखण्ड पापों में फंसे हैं । जातियों, मजहबों ने देश को खण्ड-खण्ड कर कर डाला है । अनेक साधु नशा, अशिक्षा अनाचार में फंसे भोली जनता को अपने जाल में फंसा रहे हैं तो कुछ भव्य भवनों के स्वामी बने विलासों में मग्न है । तो कुछ धूप, अग्नि, उपवास आदि मिथ्या तप (आयुर्वेद व अभ्यास के सहारे) करके खुले चौराहों पर लौकेषणा व वित्तैषणा के मारे अपने मिथ्या योग बल की प्रसिद्धि कर रहे हैं । वे नहीं समझते कि योगी भीड़ में अपना प्रदर्शन कर मदारी का काम नहीं करते । तप व धर्म वह होता है जिससे उस तपस्वी को भी लाभ मिले तथा समाज को भी परन्तु जिससे किसी को लाभ नहीं तो वह तप नहीं है । क्या ऐसे झूठे तप का कहीं किसी शास्त्र में विधान है ? क्या किसी ऋषि महर्षि के द्वारा ऐसा आडम्बर कभी रचा गया ? परन्तु भोली जनता को क्या कहें ? आज भव्य मन्दिर बन रहे हैं, जातियों के नाम पर देवी-देवता, गुरू लोग पैदा हो रहे हैं । कोई भी मानव को बचाने की बात नहीं करता बल्कि अपने-अपने सम्प्रदाय व कथित जाति के सुधार की बात करता है । तो कोई देश व सनातन धर्म की बात करते हैं वे नहीं जानते कि वेद के बिना न देश बचेगा और न सनातन धर्म । कोई-कोई साधु अवतार बनकर प्रसिद्धि पा रहे हैं । कहीं-कहीं वैदिक ज्ञान विज्ञान की बड़ी-बड़ी बातें हो रही है परन्तु कोई स्पष्ट वैदिक सोच उनके पास नहीं है । विज्ञान का नाम लेकर क्लिष्ट वाग्जाल के द्वारा अन्धविश्वास व पाखण्ड को बुद्धि की चमकीली चद्दर से ढका जा रहा है । कुछ वेद विज्ञान शोध के इच्छुक तुरन्त ही अनेक उपकरण खरीद कर शोध करके तुरन्त फल चाहते हैं । मैं सोचता हूँ कि जब तक वेदों के पदों का गूढ़ रहस्य प्रकाशित नहीं होगा, तब तक यन्त्रों का क्या होगा? कोई वेद पाठ के

उच्चारण के प्रभाव पर शोध करना चाहते हैं, वे वास्तव में वेद विज्ञान पर नहीं बल्कि ध्वनि के प्रभाव मात्र को ही वैदिक मान लेते हैं, जिससे किसी बड़े सुफल की कोई सम्भावना नहीं है। बड़े-बड़े शिक्षित लोग, नेता, अधिकारी जो वेद, धर्म, संस्कृति के ज्ञान से सर्वथा अनाड़ी होते हैं, इन सब कथित धर्माचार्यों से आशीर्वाद लेने की मुद्रा में सिर झुकाये खड़े दिखाई देते हैं तब जन साधारण तो वास्तविक ज्ञान पाने की सोच भी नहीं सकता। उधर पाश्चात्य की आँधी प्रबल वेग से बढ़ रही है। इसके प्रभाव से कोई साधु, संन्यासी, आचार्य तक भी बचा नहीं है तब अन्यों की क्या कहें? भारत की युवा पीढ़ी भले ही धर्म का कुछ आडम्बर कर लेती दिखाई देती हो, पूजा, संध्या, यज्ञ आदि भी करती हो, अच्छे-अच्छे भाषण सुनती या देती देखी जाती हो, परन्तु सब अन्दर से खोखले हो चुके हैं। उन्हें अन्दर से अमरीका, यूरोप, जापान आदि का भूत सता रहा है अथवा वे उन्हें ही अपना आदर्श मान रहे हैं। भारतीय मनीषा के प्रचारकों के अन्दर पाश्चात्य वैज्ञानिकों, अर्थशास्त्रियों, दार्शनिकों का भारी मोह छा रहा है। उन्हें ऐसी शिक्षा दी जा रही है, जिसे पढ़कर वे भारतीय गौरव को जान ही नहीं सकते हैं। उन्हें सर्वत्र विदेशियों की ज्येष्ठता व श्रेष्ठता दिखाई दे रही है। भारतीय ऋषि मुनि तो कोरे फकीर ही दिखाई देते हैं जिनकी साधुता भी छुपा दी गयी है। ऐसे में कोई विकासशील देश, कैसे इनके आकर्षण में फंसा रह सकता है और वह क्यों नहीं विदेशी वैज्ञानिकों आदि का भक्त बनेगा?

यदि देश का संविधान महर्षि दयानन्दजी की भावनानुसार बनता। वही पाठ्यक्रम भारत में लागू होता और सभी वैदिक सनातनी कहाने वालों का सहयोग मिलता तो यह दुर्गति नहीं होती।

क्या आपने कभी सोचा कि परशुराम, हनुमान, भीष्म जैसे ब्रह्मचारियों की पूजा करने वाला क्यों पापी, चरित्रहीनों को आदर्श मान रहा है? क्यों मनु, राम, कृष्ण, भरत जैसे महापुरूषों के रहते क्रिकेटरों व पापी सिने सितारों का दीवाना बना हुआ है? एक ही कारण है कि हमें अपने महापुरूष व गौरवशाली इतिहास पर अन्तर्मन से श्रद्धा नहीं है। इस श्रद्धा को मिटाने में आधुनिक विज्ञान का भी भारी योगदान है। आज का कथित श्रद्धालु बाहर से भले ही साधुओं के चरण चूमता हो परन्तु अन्दर से वह साधुपन से घृणा करता है अन्यथा वह अपनी सन्तान को क्यों साधु बनाना नहीं चाहता? वह साधुओं के झूठे चमत्कार से डर कर अथवा झूठे आशीर्वाद के लोभ में आकर ही उनका भक्त बना दिखाई देता है। अन्दर से उसका हृदय आधुनिक शिक्षा विशेषकर विज्ञान ने पूर्ण नास्तिक बना दिया है। आज का युग अर्थ का युग है। सब लोग धन के पीछे दौड़ रहे हैं। अर्थ प्रबन्धन सबसे बड़ा व्यवसाय बन गया है और इस सब

काम में आधुनिक विज्ञान का भारी योगदान है। यदि आधुनिक विज्ञान को संसार द्वारा नितान्त त्याग दिया जाये तो मनुष्य जंगली रह जायेगा। देश की युवा पीढ़ी को प्रतीत होता है कि समस्त ज्ञान विज्ञान विदेशी वैज्ञानिकों की ही देन है। कुछ लोग कहते अवश्य हैं कि सारा ज्ञान विज्ञान वेदों से ही उत्पन्न हुआ है परन्तु जब कोई कहता है कि फिर वेदों को मानने व जानने का दावा करने वाला कोई विज्ञान क्यों नहीं खोज पाया, तो कोई उत्तर नहीं मिलता है।

हमने विश्व परिस्थिति पर चिन्तन करके यह निश्चय किया है कि सारे विश्व पर विज्ञान की चकाचौंध हावी है। आज यदि कोई देशभक्त भारतीय महापुरूषों के इतिहास की बात की बात करता है तो भी उससे पुरातात्विक प्रमाण मांगे जाते हैं, जो भी विज्ञान का ही विषय है। यदि कोई नास्तिक ईश्वर व जीवात्मा की सत्ता को नकारता है तो वह भी विज्ञान के प्रमाण देकर ही नकारता है। तब उसे चुनौती देने हेतु विज्ञान की ही आवश्यकता पड़ती है। दूसरी ओर हमें यह स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि विज्ञान के क्षेत्र में अमरीका, कनाडा, इंग्लैण्ड, जर्मनी, फ्रांस, रूस, चीन, जापान, आस्ट्रेलिया आदि देश हमसे आगे है और जो भी हमारे यहाँ विज्ञान का विकास हो रहा है उसका आधार भी विदेशी विज्ञान है, तब हम कैसे विश्वभर को वैदिक सनातन धर्म व भारतीय गौरव का अनुगामी बना सकते हैं ?

मित्रो ! अंग्रेजों ने जब इस देश को ईसाई राष्ट्र व स्थायी पराधीन बनाने की बात सोची थी तब मैक्समूलर आदि वेद भाष्यकारों के माध्यम से वेद को बाईबिल की अपेक्षा हीन सिद्ध करना लक्ष्य बनाया था। इसी प्रकार हमें उनके षड़यन्त्र को विफल करने के लिये वैदिक विज्ञान को आधुनिक विज्ञान की अपेक्षा श्रेष्ठ व ज्येष्ठ सिद्ध करने का उपाय ढूंढ़ना होगा। ऋषि दयानन्द की दृष्टि से हम भारतीय ज्ञान विज्ञान व वैदिक ज्ञान का अन्वेषण करें तो यह कार्य असम्भव नहीं है। दुर्भाग्य इस बात का है कि यह देश व स्वयं आर्य समाज के विद्वान् भी महर्षि की दृष्टि को आज तक पूर्णतः जान नहीं सके हैं। यही कारण है कि वैदिक विज्ञान शोध का शोर बहुत हो रहा है परन्तु काम कुछ भी नहीं हुआ ? हमने इस पर पर्याप्त विचार किया कि आधुनिक विज्ञान का आधार क्या है, तो अनुभव हुआ कि भौतिक विज्ञान अन्य विज्ञानों का आधार है व सबसे सूक्ष्म भी है। उसमें भी परमाणु भौतिकी पुनः नाभिकीय भौतिकी और सबसे अन्तिम व सूक्ष्म आधार पार्टिकल फिजिक्स है। हमने पार्टिकल फिजिक्स के क्षेत्र में ही भौतिक विज्ञान को सबसे अधिक विवश अनुभव किया है। इस कारण हमने निश्चय किया है कि जहां वर्तमान विज्ञान बेबस प्रतीत हो रहा है, वहाँ हम उसे वैदिक विज्ञान के द्वारा सहारा देवें तो वह वैदिक विज्ञान का भक्त बन सकता है।

टेक्नोलॉजी पर काम करना आवश्यक नहीं क्योंकि टेक्नोलॉजी तो अत्यन्त विकसित है ओर उस कारण ही मानव विलासी व दुर्बल हुआ है। कुछ लोग कहते हैं कि कोई यंत्र बनाओ तब विज्ञान हमारी बात मानेगा। उन मित्रों से मेरा निवेदन है कि टेक्नोलॉजी व सायंस दो अलग-अलग विषय हैं। सायंस सिद्धान्तों का प्रतिपादन करता है और टेक्नोलॉजी उन सिद्धान्तों के सहारे कोई यंत्र बनाती है। तब सायंस (विज्ञान) टेक्नोलॉजी का मूल आधार है। हम बतलाना चाहते हैं कि विगत सदी के विश्वप्रसिद्ध वैज्ञानिक अल्बर्ट आइस्टीन आदि अनेकों प्रसिद्ध वैज्ञानिकों ने कोई यंत्र नहीं बनाये थे बल्कि केवल सैद्धान्तिक ज्ञान दिया था, जिनके आधार पर बाद में यंत्र भी बने। हम विज्ञान के मूलभूत सिद्धान्तों को वैदिक विज्ञान में खोज कर आधुनिक विज्ञान को नयी दिशा देना चाहते हैं। इसके लिये हमने महाशिवरात्रि (ऋषि दयानन्द बोध दिवस) वि. सं. २०६२ दिनांक 26 फरवरी 2006 को एक भीषण व्रत लिया था जो इस प्रकार था –

"मैं आगामी १२ वर्षों में अमरीका, जर्मनी, जापान, कनाडा, फ्रांस, ब्रिटेन, रूस आदि विश्व के विकसित देशों के वैज्ञानिकों के मध्य वेद की अपौरूषेयता (ईश्वरीयता) व वैज्ञानिकता को सिद्ध कर दूंगा। इस हेतु सृष्टि विज्ञान, परमाणु नाभिकीय कण भौतिकी आदि के क्षेत्र में वैदिक विज्ञान के माध्यम से वर्तमान भौतिक विज्ञान को नयी दिशा देने का यत्न करूंगा और यदि ऐसा नहीं कर पाया तो अपने नश्वर शरीर का त्याग कर दूंगा।"

मेरे देह त्याग वाले विचार के विरोध स्वरूप मुझे अनेक फोन व पत्र मिले। मेरे हितचिन्तकों ने मेरे इस व्रत के विरूद्ध लेख लिखे परन्तु मैं अडिग रहा। सबको यही चिन्ता थी कि यदि लक्ष्य के किनारे पर पहुँचते ही समय सीमा व्यतीत हो गयी तो सारे जीवन की कमाई समाप्त हो जायेगी। जिस भावना से लोग दानादि दे रहे हैं, उनका पुण्य व्यर्थ हो जायेगा। न केवल वैदिक विद्वान् व आर्य कार्यकर्ता अपितु भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र के कुछ हितैषी आर्य वैज्ञानिक भी इस अभूतपूर्व कार्य के लिये 12 वर्ष का समय बहुत कम मान रहे थे। दिनांक 06–02–08 को यहाँ आयोजित वेद-धर्म-विज्ञान सम्मेलन के अवसर पर विश्वविख्यात मनुस्मृति भाष्यकार मान्यवर डॉ. सुरेन्द्रकुमारजी, न्यास के संरक्षक श्रद्धेय श्री आचार्य स्वदेशजी, भौतिक वैज्ञानिक मा. डॉ. वसन्तकुमारजी मदनसुरे तथा कई प्रान्तों से पधारे आर्यजनों, न्यासियों, दानदाताओं ने भारी दबाव देकर मुझे देह त्याग वाले विचार से पृथक होने को विवश कर दिया।

वर्तमान में मेरा संकल्प निम्नानुसार है -

1. समय सीमा सामान्यतया पूर्ववत रहेगी ।

2. यदि इस अवधि में लक्ष्य प्राप्त न कर सका तो आगामी 3 वर्ष (2021 सन् वि. सं. 2077 की महाशिवरात्रि) और भी कठोर तप कर लक्ष्य प्राप्ति का प्रयास करूंगा ।

3. लक्ष्य प्राप्ति तक किसी भी प्रकार का कहीं भी सम्मान यथा माला, शॉल, अभिनन्दन पत्र कोई पुरस्कार आदि का ग्रहण नहीं करूंगा ।

4. यदि इस अवधि में भी लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सका तो न्यास का प्रमुख व आचार्य पद को त्यागकर उस समय जैसा बुद्धि को उचित प्रतीत होगा वैसा करूंगा परन्तु स्वच्छया देह त्याग नहीं करूंगा ।

कोई-कोई सज्जन यह सकते हैं कि वर्तमान विश्व को अध्यात्म के प्रचार की आवश्यकता है, न कि विज्ञान की, क्योंकि विज्ञान तो वैसे भी निरन्तर बढ़ रहा है । उनसे निवेदन है कि सच्चे विज्ञान के बिना सच्चा अध्यात्म कभी आगे नहीं बढ़ सकता। दोनों परस्पर दूर खड़े रहकर एक दूसरे के शत्रु बने हुये हैं, यह देखकर हमको भारी दुःख होता है । दोनों ही एक दूसरे को मूर्ख मान रहे हैं । आज विज्ञान के अभाव में अध्यात्म, सच्चा अध्यात्म न रहकर पाखण्ड व अंधविश्वास का पिटारा मात्र रह गया है, वहीं बिना सच्चे अध्यात्म के विज्ञान भी सच्चा व शान्तिदायक विज्ञान नहीं रहकर, भोगवादी अशान्तिजनक नास्तिकपन में बदल गया है । हमारा मानना है कि वैज्ञानिकों के बीच वैदिक पदार्थ विज्ञान की प्रतिष्ठा होने से विश्व का शिक्षित समुदाय वेद को गणित, विज्ञान आदि की भाँति मिलकर बिना किसी भेदभाव के पढ़ेगा । फिर उसे वेद के अध्यात्म, योग, समाज व्यवस्था, अर्थशास्त्र पर भी विश्वास होगा। तब विज्ञान व अध्यात्म दोनों मिलकर सच्चे वैदिक धर्म के रूप में विश्व में शान्ति, सुख, समृद्धि का स्वर्गिक वातावरण बनाने में समर्थ हो सकेंगे । सारे सम्प्रदाय वैदिक धर्म में विलीन हो जायेंगे ।

मित्रो ! मैंने अपना जीवन इसी लक्ष्य हेतु समर्पित कर दिया है । जो विद्वान् हमारी क्षमता व योग्यता पर व्यंग वा अविश्वास करते हैं वे मेरे अगले लेख 'वैज्ञानिकों के बीच मेरे अनुभव' को ध्यानपूर्वक पढ़ने की कृपा करें । आश्चर्य है कि किसी भी वैज्ञानिक ने आज तक मेरी औपचारिक शिक्षा का प्रश्न खड़ा नहीं किया परन्तु मेरे अपने

ही घर में कोई विद्वान् यहां तक कि प्रारम्भिक विद्यार्थी भी अनेक प्रकार की टिप्पणियां करते हैं। मैं अनुभव करता हूँ कि न तो दर्शनों के तत्व को अभी तक समझा गया है और न व्याकरण, निरूक्त आदि का विशेष उपयोग ही वैदिक पदों के समझने में हो रहा है। हम ऋषि-भाष्य को भी सम्यग रूपेण नहीं समझ पा रहे हैं।मैं विनम्रता पूर्वक इस पवित्र व महान् कार्य में सभी वेद, धर्म, विज्ञान, मानवता व राष्ट्र के भक्त महानुभावों का सर्वविध सहयोग चाहूँगा। जो पौराणिक बन्धु आर्य समाज को मूर्ति पूजा आदि के कारण विरोधी मानते हैं, वे क्या नहीं मानते कि वेद की रक्षा करना आर्य समाज का ही दायित्व नहीं बल्कि आपका तथा समस्त मानव जांति का महान् कर्तव्य है। यदि वेद नहीं बचा तो मानवता भी बच नहीं सकेगी। आशा है आप सभी मेरा सहयोग कर इस ईश्वरीय कार्य को आगे बढ़ाने में विशेष सहायक बनेंगे।

॥ ओ३म् ॥

''वैज्ञानिकों के बीच मेरे अनुभव''

आदरणीय महानुभाव !

बचपन से ही मेरी जहाँ विज्ञान विशेषकर भौतिक विज्ञान (विशेषतः परमाणु-नाभिक, कण-खगोल भौतिकी) एवं गणित में गहरी रूचि रही है वहीं सत्य, अहिंसा व अस्तेय आदि के गहरे संस्कार रहे हैं । दोनों का सम्मिश्रण ही आज वैदिक एवं आधुनिक भौतिक विज्ञान की दिशा में अध्ययन व अनुसंधान का साधन बन गया है । विद्यार्थी जीवन से ही मेरा अपनें अध्यापकों व अन्य शिक्षाविदों से ईश्वर-जीव-प्रकृति के स्वरूप व सत्ता पर वाद-संवाद चलता आया है । अगस्त 2004 में 'वर्ल्ड कांग्रेस ऑन वैदिक सायंसेज' बैंगलोर (कर्नाटक) में मैंने सर्वप्रथम विज्ञान के प्राध्यापकों तथा वेद व दर्शन के विद्वानों को एक मंच पर देखा । सात देशों के वक्ताओं (कुल 320) में से शायद आर्य समाजी लगभग 15–20 से ही हों । लगभग सभी वक्ता (अपवाद के अतिरिक्त) चाहे वे वैज्ञानिक हों वा संस्कृतज्ञ वैदिक विद्वान् सभी को अंग्रेजी में ही बोलते देखा तथा अंग्रेजी भाषा में ही हिन्दी व संस्कृत भाषा की महिमा का गुणगान करते सुना व देखा । वैदिक व वैज्ञानिक दोनों ही विद्वानों को आधुनिक विज्ञान के पीछे वेद मन्त्रों को चलाते देखा तथा दोनों ही पक्ष के विद्वानों को शांकर अद्वैतवाद की पुष्टि करते देखा । मुझे 'सृष्टि का मूल उपादान कारण' विषय पर पत्रवाचन करना था । मेरा पत्रवाचन हिन्दी भाषा में होना था तथा उसके महत्वपूर्ण अंशों का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद करके स्लाइड बनाकर प्रोजेक्टर से दिखाने की व्यवस्था भी कर ली थी। सभी वक्ताओं को पत्रवाचन हेतु 12–12 मिनट का समय निर्धारित था तथा 3–3 मिनट शंका समाधान हेतु निर्धारित था । मैंने वक्ताओं की गलत धारा का खण्डन करने का विचार किया। अपने साथियों के कहने पर भी मैंने अपने 10 पृष्ठीय पत्र का 12 मिनट में बोलने योग्य सारांश लिखने का विचार नहीं किया । इंग्लैण्ड के एक भौतिक वैज्ञानिक डॉ. जितेन्द्रजी साहा को भौतिक विज्ञान के द्वारा अद्वैत की स्थापना करते सुनकर सभा भवन से बाहर आते ही मैंने उन्हें कहा "डॉ. साहाजी ! आपने मिथ्या मत का प्रतिपादन करने का असफल प्रयास किया है । आप या तो मेरा पत्रवाचन सुनें अथवा अलग से समय देकर चर्चा कर लें ।" उन्होंने मेरे पत्र को सुनने का वचन दिया तथा व्यक्तिगत चर्चा से दूरी रखना ही उचित समझा । त्रिवेन्द्रम विश्वविद्यालय के विज्ञान संकाय के डीन प्रो. रामचन्द्रन्जी नैय्यर ने भी मूल कणों की चर्चा करते-करते अन्त में अद्वैतवाद की स्थापना का प्रयास किया । मैंने उनसे अलग से भेंट करके कहा "प्रो. नैय्यर साहब! आपने वेद मंत्रों के अशुद्ध अर्थ करके शांकर अद्वैतवाद की पुष्टि करने का मिथ्या प्रयास किया । वर्तमान

विज्ञान द्वारा खोजे गये कणों में से कोई भी कण मूलकण नहीं माना जा सकता ।" लगभग 10–15 मिनट की चर्चा में सरल हृदय प्रो. नैय्यरजी ने वर्तमान विज्ञान की भूलों को स्वीकार किया। मैंने यह भी देखा कि वैदिक व भौतिक विज्ञान के विशेषज्ञ दोनों ही वे अपने–अपने ढ़ंग से बिग बैंग थ्यौरी का प्रतिपादन कर रहे हैं । मुझे यह थ्यौरी वर्तमान में माने जा रहे स्वरूप में कभी स्वीकार नहीं हुई । मैंने अपने 12 मिनट में से 1 मिनट में तीनों विचार धाराओं का संक्षिप्त खण्डन का मानस बनाया । (1) अंग्रेजी भाषा का साम्राज्य । (2) वर्तमान विज्ञान द्वारा वैदिक विज्ञान को अपने पीछे चलाना । (3) वर्तमान विज्ञान व वैदिक विद्वानों द्वारा ब्रह्म सूत्रों का मिथ्यार्थ करके शांकर अद्वैतवाद की पुष्टि करना । यह कांग्रेस राष्ट्रिय विज्ञान भारती के तत्वावधान में आयोजित की गयी थी । हमने अपने पत्रवाचन के पूर्व कहा "विज्ञान भारती के भव्य भवनों में भाषा भारती हिन्दी की दुर्गति को मैंने देखा । विज्ञान को तो देखा लेकिन भारती नजर नहीं आयी । अल्बर्ट आंइस्टाइन एवं स्टीफन हॉकिंग द्वारा वेद की गलत व्याख्यायें होते देखा, याज्ञवल्क्य, यास्क और दयानन्द आदि ऋषियों को कोने में उपेक्षित बैठे देखा । आंइस्टाइन एवं आद्य शंकराचार्य के भक्तों द्वारा ब्रह्म सूत्रों की गलत व्याख्या होते देखा । जब तक ब्रह्म सूत्र में 'जन्माद्यस्य यतः' सूत्र जीवित है तब तक संसार का कोई विद्वान् ब्रह्म सूत्रों से शांकर अद्वैतवाद की सिद्धि नहीं कर सकता। अद्वैतवाद को आर्य समाज व ऋषि दयानन्द भी मानते हैं परन्तु हमारा अद्वैतवाद है "न द्वितीयो न तृतीयो न चतुर्थो..अर्थववेद" अर्थात् वह ब्रह्म एक ही है । इसका तात्पर्य यह नहीं है कि प्रकृति व जीव की सत्ता नहीं है बल्कि ब्रह्म एक ही है अनेक ब्रह्म नहीं है । जिसको इस विषय में विस्तृत चर्चा करनी हो, सेमीनार हॉल के बाहर आकर कर ले । अब मैं अपना पत्रवाचन आरम्भ करता हूँ....।"

हमारे इस चैलेंज से हॉल में सन्नाटा छा गया । किसी ने प्रतिवाद नहीं किया । वहाँ पर उपस्थित श्री विजयकुमारजी भल्ला, अतिरिक्त मुख्य अभियन्ता, न्यूक्लियर पॉवर कार्पोरेशन ऑफ इण्डिया लिमिटेड, मुम्बई को हमारा पत्र सबसे अच्छा लगा । हमने अपने पत्र में वर्तमान प्रचलित बिग बैंग थ्योरी का प्रबल खण्डन किया । क्वार्क मॉडल, मूलकण आदि विषयों पर वर्तमान विज्ञान का खण्डन किया । हमारे पत्र पर किसी भी विद्वान् वा वैज्ञानिक ने कोई शंका प्रस्तुत नहीं की । विशेष उल्लेखनीय प्रथम यह है कि वहां वर्तमान सभी वक्ताओं में से वर्तमान विज्ञान का खण्डन करके वैदिक विज्ञान की स्थापना करने वाले सम्भवतः हम एक मात्र वक्ता थे । दूसरी बात यह और भी महत्वपूर्ण है कि हमने इस पत्र में एक विशेष सिद्धान्त की स्थापना की थी कि शून्य आयतन में अनन्त द्रव्यमान व ऊर्जा का होना सम्भव नहीं है । स्मरण रहे कि सारा

विश्व उस समय यही मानता था कि बिग बैंग (महाविस्फोट) के समय से ठीक पूर्व यह ब्रह्माण्ड अनन्त ऊर्जा व अनन्त द्रव्यमान वाला होते हुये भी शून्य आयतन में समाया था। दिनांक 04–08–2004 के दैनिक भास्कर में हमने मुख पृष्ठ पर पढ़ा कि भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र, मुम्बई के वैज्ञानिक डॉ. आभासजी मित्रा ने शून्य आयतन में अनन्त द्रव्यमान होने के सिद्धान्त का खण्डन किया और उनके खण्डन को विश्व प्रसिद्ध भौतिक वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग ने स्वीकार कर अपनी भूल भी स्वीकारी। डॉ. मित्रा साहब के इस लेख की विश्व भर में चर्चा हुई। यह प्रथम अवसर था जब विश्व में किसी वैज्ञानिक ने शून्य आयतन में अनन्त द्रव्यमान न होने की बात कही थी। आर्यों ! आपको मैं निवेदन कर रहा हूँ कि विश्व में भले ही यह विचार डॉ. मित्रा साहब ने दिया है और उन्हें अन्तर्राष्ट्रिय ख्याति मिली परन्तु हमने 9 अगस्त 2004 को बैंगलोर में पढ़े गये लेख में इसी सिद्धान्त की स्थापना की थी। यह पत्र हमने 17–06–04 को बैंगलोर भेजा था अर्थात् डॉ. मित्रा साहब से लगभग डेढ़ माह पूर्व हमने यह सिद्धान्त अपने पत्र में लिखा था। इस कारण मेरी इच्छा डॉ. मित्रा साहब से मिलने की थी। हमारे न्यासी प्रिय अभिषेक आर्य एवं प्रिय महेन्द्रसिंह ने भी मुझे इस कारण बैंगलोर विशेष रूप से जाने का आग्रह किया था। इधर श्री भल्ला साहब ने हमारे पत्रवाचन से प्रभावित होकर मुम्बई आने का आग्रह किया। मैं 24–08–04 को एक दिन के प्रवास पर मुम्बई गया। जाते ही मैंने भल्ला साहब से कहा कि मैं डॉ. मित्रा साहब से मिलने की इच्छा रखता हूँ। तब उनका कहना था कि आजकल वे अन्तर्राष्ट्रिय चर्चा में होने से हाई फाई हो गये हैं। उनसे मिलना कठिन होगा। मेरे आग्रह पर उन्होंने डॉ. मित्रा साहब का फोन नं. पता करके फोन द्वारा मेरे पत्रवाचन की चर्चा की तथा मिलने के लिये समय देने का निवेदन किया। मुझे आश्चर्य है कि इससे मित्रा साहब इतने प्रभावित हुये कि स्वयं भल्लाजी के निवास पर मुझसे मिलने पधारे और अत्यन्त श्रद्धानवत होकर चर्चा की। अपना विश्व चर्चित पत्र तथा उसके पश्चात् उसी मान्यता को अपनाने वाले आस्ट्रिया, पोलैण्ड तथा आयरलैण्ड के तीन वैज्ञानिकों द्वारा संयुक्त रूप से लिखे पत्र की छात्रा प्रतियां मुझे दी तथा मेरे पत्र की छाया प्रति मुझसे ली। लगभग 45 मिनट तक चला हमारा संवाद अत्यन्त आत्मीयतापूर्ण व सुखद रहा। उनके चले जाने पर श्री भल्ला साहब ने मुझे कहा "मैं श्री अमरस्वामीजी व महात्मा श्री आनन्द स्वामीजी के समय से आर्य समाज में हूँ और अब विज्ञान भारती जो आर. एस. एस. की एक शाखा है से जुड़ा हूँ। मैंने आर्य समाज तथा विज्ञान भारती की अनेक वेद संगोष्ठियों को देखा है। वैदिक विद्वान् मंचों पर भले ही कुछ कहें परन्तु यह प्रथम बार देखा है कि किसी वैदिक विद्वान् से डॉ. मित्रा साहब जैसा अन्तर्राष्ट्रिय ख्याति का वैज्ञानिक प्रभावित हुआ है। अब आपको सभी विषय छोड़कर वेद विज्ञान

पर शोध करना चाहिये तो विश्व में एक बहुत बड़ा कार्य हो सकता है । " भल्ला साहब के आतिथ्य व मित्रा साहब की मेधा व आत्मीयता से मैं बहुत प्रभावित हुआ। इसके पश्चात् भल्ला साहब ने मेरे पत्र की अनेक छाया प्रतियां करवाकर विज्ञान भारती से जुड़े तथा भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र में कार्यरत वा अवकाश प्राप्त वैज्ञानिकों को बांटी और मित्रा साहब के साथ हमारी भेंट से सबको अवगत कराया । यहां यह बता देना उचित है कि डॉ. श्री मित्रा साहब, भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र (B.A.R.C.) में थ्यौरीटिकल एस्ट्रोफिजिक्स सैक्शन के हैड पद पर कार्यरत हैं । उसी रात अर्थात् 24-08-2004 को विज्ञान भारती से जुड़े अनेक वैज्ञानिक श्री भल्ला साहब के निवास पर मुझसे मिलने पधारे जिन में श्री डॉ. जगदीशचन्द्रजी व्यास विशेष रूप से प्रभावित हुये । उन्होंने व भल्ला साहब ने मेरी व्यवस्था मुम्बई में ही करने का प्रस्ताव किया परन्तु निम्न कारणों से मैं उनका प्रस्ताव स्वीकार नहीं कर सका -

(1) मैं श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास का गठन कर चुका था ।

(2) मैं आर्य समाज के मंच से ही कोई भी कार्य करना चाहता था क्योंकि ऋषि दयानन्दजी ग्रन्थों के सहायता बिना कोई भी व्यक्ति वेद पर अनुसंधान कर ही नहीं सकता ।

(३) मुम्बई की जलवायु भी मेरे अनुकूल नहीं रहता ।

(४) विज्ञान भारती में शोधरत वैज्ञानिक वेद के निकट तक भी नहीं पहुँचे हैं और न पहुँच ही सकते हैं । वे आर्यभट्ट, वराहमिहिर, भास्कराचार्य, नागार्जुन, ब्रह्मदत्त, चरक, सुश्रुत और बहुत कम अंशों में महर्षि कणाद से आगे न तो जानते हैं और न जानने की कोई योजना ही उनके पास है । वे इन्हीं महापुरूषों के विचारों को वैदिक विज्ञान की पूर्णता मान बैठे हैं ।

हां, इतना अवश्य है कि उन निःस्वार्थ हितैषी वैज्ञानिकों के सुझाव को मैंने स्वीकार किया । मेरा आत्मविश्वास बढ़ा और मैंने समीक्षात्मक लेख, प्रवचन आदि को त्याग वैदिक व आधुनिक भौतिक विज्ञान पर शोध करने को अपना एक मात्र लक्ष्य बना लिया । श्री भल्ला साहब के आग्रह पर मैंने अपने पत्र की व्याख्या में पत्र के शीर्षक "सृष्टि मूल उपादान कारण" नामक एक लघु शोध पुस्तिका लिखी । इसकी एक प्रति डॉ. आभासजी मित्रा तथा दूसरी प्रति श्री भल्लाजी के माध्यम से डॉ. जगदीशचन्द्रजी व्यास आदि कई वैज्ञानिकों को भेजी । एक माह पश्चात् जनवरी 2005 में उन वैज्ञानिकों ने मुझे भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र, मुम्बई आमन्त्रित किया । आवासादि सम्पूर्ण व्यवस्था वहीं गेस्ट हाऊस (एन.बी.एच.) न्यू बैचलर हॉस्टल में श्री भल्लाजी द्वारा की गयी । एक सप्ताह में कई वैज्ञानिकों से उस पुस्तक की विषय वस्तु पर चर्चा हुई । एक दिन डॉ. मित्रा साहब अपने आवास पर ले गये ओर ढाई घण्टे वहीं चर्चा हुई ।

भोजनादि की भी उन्होंने बड़ी आत्मीयता व श्रद्धापूर्ण व्यवस्था की । मेरी पुस्तक की अनेक त्रुटियों को दूर किया और उनके कई समाधानों को मैंने अस्वीकार भी कर दिया । एक लगभग अपरिचित विश्व स्तरीय वैज्ञानिक की सेवा व श्रद्धा से मैं दंग रह गया । अन्य किसी भी वैज्ञानिक ने कोई त्रुटि नहीं बतलाई । उस समय हमारे न्यास का कार्यालय पाली-मारवाड़ में था । रेल में आते समय श्री डॉ. मित्रा साहब के सुझाये कई समाधानों में वापिस कुछ त्रुटियां मुझे अनुभव हुई, उन्हें पाली आते ही सात प्रश्न बनाकर डॉ. मित्रा साहब को भेजा । जिसके उत्तर में उन्होंने कुछ का समाधान दिया, कुछ में मेरी गलती ही बताई तो कुछ पर अप्रसन्नता व व्यंग का प्रदर्शन किया। इस पत्र को जब हमारे न्यासी प्रियवर जनकसिंह व प्रियवर महेन्द्रसिंह ने पढ़ा तो उन्हें कुछ निराशा हुई और मुझे कहा 'गुरूजी ! अब आप मित्रा साहब का खण्डन मत करना अन्यथा वे इस पुस्तक पर अपनी सम्मति नहीं लिखेंगे अथवा प्रतिकूल लिख देंगे ।' इस पर मैंने उन दोनों को कहा " चाहे सर इंइस्टीन भी मुझे आकर कोई सिद्धान्त बतायें, मेरे ऊपर व्यंग करें परन्तु यदि मेरी बुद्धि उनके सिद्धान्त को स्वीकार नहीं करती है, तो उनके व्यंग से कदापि निराश नहीं हो सकता ।"

यदि मित्रा साहब कोई सम्मति नहीं दें वा प्रतिकूल दें, तो भी मैं विचलित नहीं होऊंगा। सम्मति क्या देनी, यह उनकी सोच व अधिकार की बात है, जो मेरी बुद्धि कहती है, वही करूंगा। उनसे ढाई घण्टे चर्चा में जो बिन्दु उभर रहे हैं, वे ही सम्मति के रूप में प्रस्तुत करूंगा ।" मैंने मान्य डॉ. मित्रा साहब के तर्कों, व्यंग आदि पर अपनी विशेष व्याख्यापूर्ण टिप्पणी पुस्तक में लिखी जिसे पुनः उन्हें सम्मति हेतु भेजा । मुझे प्रसन्नता है कि उन्होंने मेरे तर्कों को समझा । वस्तुतः वैज्ञानिकों में यह सबसे बड़ा गुण होता है कि अपनी भूल तथा पराये गुणों को तत्काल स्वीकार करते हैं । काश ! यह गुण वैदिक वा संस्कृत के विद्वानों में आ जाये तो आर्य समाज वा वैदिक समाज धन्य हो जाये। उन्होंने अपनी सम्मति जो पुस्तक में प्रस्तावना के रूप में अंकित है लिखा. "मैं आशा करता हूँ कि अध्यवसायी वैज्ञानिक इस पुस्तक को आदर की दृष्टि से देखेंगे. ..यह अत्यन्त श्रद्धा का विषय है कि स्वामी अग्निव्रत बिना सुव्यवस्थित ढंग से विज्ञान पढ़े, स्वयं ही पढ़कर वैदिक रहस्यों को जानने हेतु अत्यन्त उत्साह से आगे बढ़ रहे हैं । यह मेरे लिये आश्चर्य की बात है कि कण भौतिकी में ब्रह्माण्ड में जिन कणों वा कणों के समुदाय को मूल कण कहा जाता है, मूल कण नहीं है, ऐसी कमियों को देखने में स्वामी अग्निव्रत तीक्ष्ण रूप से जागरूक हैं । स्वामी अग्निव्रत मानते हैं कि ऐसे प्रश्नों का सही उत्तर वेदों में ही खोजा जा सकता है, आधुनिक विज्ञान के द्वारा नहीं...।

मैं अनुभव करता हूँ कि अध्यवसायी वैज्ञानिकों को भी कुछ बिन्दुओं पर अपने

अन्वेषणों की सिद्धि में वैदिक संस्कृति का भी सहयोग लेना चाहिये । वास्तव में आधुनिक क्वांट यान्त्रिकी वेदों से कई रहस्यों के बीज प्राप्त कर सकती है । मैं व्यक्तिगत रूप से इस पुस्तक के अध्ययन से लाभान्वित हुआ हूँ और आशा करता हूँ कि दूसरे पाठक तथा अध्यवसायी वैज्ञानिक भी मेरी ही भाँति इसे पढ़कर लाभ उठायेंगे...।"

इस सम्मति का आशय पाठक सहजता से समझ सकते हैं । इससे हमारा मनोबल ऊंचा हुआ और हम आगे बढ़ने लगे । पाली में रहते हुये ही हमने राजस्थान पत्रिका दैनिक में पढ़ा कि 20 जुलाई 2005 को रक्षा प्रयोगशाला, जोधपुर में भारतीय विज्ञान अकादमी तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के चेयरमेन रहे पद्मविभूषण से सम्मानित विश्वविख्यात वैज्ञानिक स्व. डॉ. दौलतसिंहजी कोठारी की स्मृति में एक संगोष्ठी का आयोजन होने वाला है जिसमें मुख्य वक्ता पद्मभूषण प्रो. अजीतरामजी वर्मा, सेवानिवृत निदेशक, राष्ट्रिय भौतिकी प्रयोगशाला, नई दिल्ली अपना व्याख्यान 'रमनप्रभाव' विषय पर देंगे । मैं अपनी पुस्तकें जो हिन्दी में ही थीं, अंग्रेजी अनुवाद उस समय तक नहीं हो पाया था, लेकर गया । कई सुरक्षा चौकियों से गुजरता हुआ मैं सेमीनार हाल तक पहुँचा । सम्भवतया 150–200 की संख्या में श्रोता थे जिनमें अधिकांश वैज्ञानिक व कुछ तकनीकी कर्मचारी आदि थे । भगवे वस्त्रधारी मुझे देखकर एक वैज्ञानिक ने कुतूहल पूर्वक कहा- "महात्माजी ! आप कहाँ से व क्यों पधारे हैं ?" मैंने कहा- "प्रो. अजीतरामजी वर्मा साहब को सुनने व कुछ चर्चा करने आया हूँ । " उनके पूछने पर अपने कार्य का संक्षेप में परिचय कराया । इस पर उन्होंने उस प्रयोगशाला के वरिष्ठ वैज्ञानिक प्रोफेसर बढ़ेराजी की ओर संकेत करते हुये मुझे उनसे मिलने की सलाह दी । मैं प्रो. बढ़ेराजी से मिला और अपनी एक पुस्तक उन्हें भेंट की । उनके माध्यम से व्याख्यान के पश्चात् अल्पाहार करते हुये 150–200 वैज्ञानिक व अन्य श्रोताओं के बीच मैंने प्रो. वर्मा साहब को अपना परिचय देते हुये पुस्तक भेंट की तो उन्होंने मुझ साधु को देखकर व्यंग पूर्वक कहा "स्वामीजी ! आप लोग व्यर्थ के प्रश्न करते हैं । बिग बैंग से पूर्व क्या था ? उससे पूर्व क्या था ? प्रश्न करने में कुछ खर्च नहीं होता है ।" यह सुनकर मैंने बड़े आत्मविश्वास पूर्वक कहा- "प्रोफेसर साहब ! मैं आपसे प्रश्न पूछने नहीं बल्कि उत्तर देने आया हूँ । न केवल बिग बैंग वर्तमान स्वरूप में क्यों गलत है बल्कि सबसे पूर्व क्या था, यह भी इस पुस्तक में पढ़ लेना..।" मेरे उत्तर को सुनकर वे व अन्य वैज्ञानिक दंग रह गये । प्रो. वर्माजी ने मुझे कहा "अच्छा यदि ऐसा है तो मैं इसे अवंश्य पढूंगा..।" फिर प्रो. बढ़ेराजी के परामर्श पर मैंने स्व. डॉ. दौलतसिंहजी कोठारी के सुपुत्र जो स्वयं वैज्ञानिक हैं डॉ. लक्ष्मणजी कोठारी को अपनी पुस्तक भेंट की तो उन्होंने भी व्यंग करते हुये कहा "स्वामीजी! बुरा न मानें तो एक

बात कहूँ ।" मैंने कहा "निःसंकोच कहिये, मैं बुरा नहीं मानूंगा ।" तब इन्होंने कहा "वेद अथवा संस्कृत के विद्वान् नकल करने में बहुत चतुर होते हैं । जिस बात को हम खोजते हैं, उसी को वेद अथवा संस्कृत के किसी ग्रन्थ में वे दिखाते हैं कि हमारे वेद में यह खोज पहिले से ही मौजूद है । आज तक ऐसी ऐसी कोई बात इन्होंने नहीं बताई जो हम नहीं जानते हैं ।" इस पर मैंने कहा "डॉ. कोठारीजी ! आप लोग जो आज जानते हैं उसको मैंने इस पुस्तक में गलत सिद्ध किया है और जो आप अभी नहीं जान पाये हैं उन रहस्यों का इसमें उद्घाटन किया है ।" मेरा उत्तर सुनकर उन्होंने कहा कि आप प्रथम बार ऐसे वैदिक विद्वान् मिले हैं, जो ऐसा दावा कर रहे हैं । उसके पश्चात् प्रो. बढ़ेराजी के परामर्श पर हमने रक्षा प्रयोगशाला जोधपुर के निदेशक श्री एम. पी. चचेरकर साहब से भेंट कर उन्हें भी पुस्तक की एक प्रति भेंट की । वे धार्मिक स्वभाव के व्यक्ति प्रतीत हुये । श्री चचेरकर साहब देश में से 25 ऐसी समितियां जो भारत की तीनों सेनाओं को अस्त्र-शस्त्र, गोला-बारूद, वाहन, पोत-विमान आदि सप्लाई करती हैं, में से एक समिति के अध्यक्ष भी थे । वे मुझसे अत्यन्त प्रभावित हुये और पूर्ण सहयोग का वचन दिया। इसके पश्चात् कई वैज्ञानिकों ने मुझसे पुस्तकें लीं । पाली आने के पश्चात् लगभग १ माह बाद मैंने प्रो. अजीतरामजी वर्मा को फोन करके पूछा, "आपने पुस्तक पढ़ी क्या ? यदि हां तो कैसी लगी...आपकी औपचारिक सम्मति चाहूँगा ।" तब उन्होंने फोन पर ही उत्तर दिया "स्वामीजी! मैंने आपकी पुस्तक पढ़ी है । बहुत अच्छी है । सॉरी ! मैं औपचारिक कमेंट देने में असमर्थ हूँ। मैं ऑप्टिक्स (प्रकाश विज्ञान) का वैज्ञानिक हूँ और आपकी पुस्तक कॉस्मोलॉजी, नाभिकीय-परमाणु व कण भौतिकी से सम्बन्धित है । इसलिये यदि मैं इस पर कोई औपचारिक टिप्पणी लिखूँगा तो मेरे साथी कहेंगे कि वर्माजी ने अनधिकार चेष्टा की है ।" पाठकगण ! देखें कि एक पद्मविभूषण से सम्मानित 75 वर्ष की आयु का अनुभवी राष्ट्रिय स्तर का वैज्ञानिक हमारी पुस्तक पर टिप्पणी करने से बचता है और विज्ञान से अनभिज्ञ व अल्पपठित कुछ आर्य विद्वान् वा छात्र हमारी पुस्तक पर कोई भी गलत टिप्पणी चाहे जब कर देते हैं । इस पुस्तक को पढ़कर रीजनल कॉलेज अजमेर के भौतिकी के प्रवक्ता प्रिय श्री वेदप्रकाशजी आर्य जो इस समय भारतीय विज्ञान संस्थान, बैंगलोर में भौतिकी विज्ञान से पी-एच.डी. कर रहे हैं, ने मेरे कहने पर अंग्रेजी अनुवाद करने पर सहमति प्रसन्नता पूर्वक जताई। श्री आर्य बहुत मेधावी युवक हैं तथा सरल, सौम्य व्यत्त्वि के धनी हैं । उन्होंने तथा मेरे अनुज प्रिय जितेन्द्रसिंह सिसोदिया के साथी प्रिय डॉ. एस. पी. सिंह भदौरिया, जो कुचामन महाविद्यालय, कुचामनसिटी (नागौर) में अंग्रेजी के प्रवक्ता थे, ने मिलकर पुस्तक का अंग्रेजी में अनुवाद किया। इसे "बेसिक मेटेरियल कॉजी ऑफ द

क्रियेशन'' नामक शीर्षक से प्रकाशित किया गया । इस कार्य में श्रीमाल के श्री पुखराजजी सोनी (प्रधानाचार्य) का भी कुछ सहयोग रहा । इस पुस्तक को मैंने 20 जुलाई 2006 को रक्षा प्रयोगशाला, जोधपुर में आयोजित डॉ. डी. एस. कोठारी स्मृति व्याख्यानमाला में मुख्य वक्ता के रूप में पधारे प्रधानमन्त्री पी. वी. नरसिम्हारावजी के कार्य काल में भारतीय रक्षा मन्त्री के वैज्ञानिक सलाहकार रहे पद्मविभूषण श्री वी. एस. अरूणाचलम् को यह पुस्तक अपने न्यासी एडवोकेट प्रियवर श्री कमलेश रावल के हाथ तथा प्रयोगशाला के निदेशक श्री एम. पी. चचेरकर साहब के माध्यम से भेंट करवाई । श्री चचेरकर साहब ने हमारे विषय में उनसे विशेष चर्चा की । उसके बाद श्रीमान् अरूणाचलम् साहब से हमारा सम्पर्क नहीं हो सका। वे भी पूर्व वित्त व विदेशमन्त्री श्री जसवन्तसिंहजी जसोल के विवाद में फंस गये । फिर हमने पुस्तक के अंग्रेजी संस्करण को विश्वविख्यात वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग्स व अमेरिका, इंग्लैण्ड, पोलैण्ड, आस्ट्रिया आदि देशों के कुछ वैज्ञानिकों के साथ भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम साहब, विश्वविख्यात भारतीय खगोल वैज्ञानिक पद्मविभूषण प्रो. जयन्त विष्णुजी नार्लीकर, पद्मविभूषण प्रो. एम.जी.के. मेनन साहब व कई आई.आई.टी. के निदेशकों व टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फण्डामेंटल रिसर्च, मुम्बई के निदेशक को भेजा परन्तु प्रो. नार्लीकर साहब के अतिरिक्त कहीं से कोई सम्मति प्राप्त नहीं हुई । कहीं-कहीं से मात्र प्राप्ति सूचना व धन्यवाद पत्र ही प्राप्त हुआ। मैं विचारता हूँ कि इन लोगों ने मेरी पुस्तक को पढ़ा ही नहीं होगा । मेरे पास भी कुछ विद्वान् अपनी पुस्तकें सम्मति हेतु भेजते हैं परन्तु मैं व्यस्ततावश उन्हें पढ़ ही नहीं पाता और उन महानुभावों को मात्र धन्यवाद पत्र ही भेज पाता हूँ, तब ये बड़े-बड़े वैज्ञानिक कैसे पढ़ सकेंगे ? हां, व्यक्तिगत भेंट करने से ही निकटता हो सकती है । प्रो. नार्लीकरजी ने लिखा, "मैं आपकी पुस्तक पर टिप्पणी लिखने में असमर्थ हूँ क्योंकि आप दर्शन तथा तर्कों का आश्रय लेते हैं जबकि विज्ञान प्रयोगात्मक निष्कर्ष तथा गणित पर अपने परिणाम निकालता है ।" हमने प्रो. नार्लीकरजी के एक परिचित सज्जन के द्वारा सन्देश भिजवाया, "प्रो. साहब ! आप हमारे तर्क व दर्शन पर भले ही सम्मति न लिखना चाहें परन्तु हमने अपनी पुस्तक में आधुनिक विज्ञान का जो खण्डन किया है, जिसमें आपके द्वारा मानी जाने वाली स्टीडी स्टेट थ्यौरी का भी दो पृष्ठ में आपका नाम लेकर खण्डन किया है, उस पर तो टिप्पणी करने का कष्ट करें ।" जब मैंने यह सन्देश भिजवाया था, तब वे जर्मनी में थे । उन्होंने उत्तर दिया, "मैं भारत आकर स्वामीजी से मिलना चाहूँगा," ऐसा मुझे बताया गया । उसके पश्चात् मैं उनसे मिलने का कोई प्रयास नहीं कर पाया । दिसम्बर 2006 में हमारे न्यास के सहयोगी संरक्षक जो अब इस संसार में नहीं रहे, श्री अशोककुमारजी

बंसल के आग्रह पर हमारा एक व्याख्यान वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सूरत के तुलनात्मक साहित्य विभाग एवं भौतिक विज्ञान विभाग द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित कराया गया । जब हमें लेकर श्री अशोकजी बंसल, श्री निर्मिलेशजी आर्य तथा तुलनात्मक साहित्य विभाग की अध्यक्षा प्रोफेसर डॉ. सविताजी गौड़ विश्वविद्यालय पहुँचे तो सुनने के लिये आये छात्र-छात्रायें हमें देखकर हंसने लगे । हमारे पास कोई आकर्षण नहीं था जिससे वे सुनने की विशेष उत्कंठा रखते परन्तु विश्वविद्यालय के प्रो. वाइस चांसलर प्रो. जयेशजी देशकर, भौतिकी विभागाध्यक्ष प्रो. के. सी. पोरियाजी, सीनेटर्स, प्रोफेसर्स आदि को देखकर न केवल भौतिकी विभाग बल्कि समस्त विज्ञान संकाय के छात्रों से सेमीनार हॉल खचाखच भर गया । हमने ब्लेक बोर्ड की व्यवस्था विशेष रूपेण कराई थी, जिससे हम अपने विषय को प्रोफेसर की भाँति पढ़ा सकें । हमारा व्याख्यान सृष्टि के मूल उपादान विषय पर ही था जिसमें बिग बैंग थ्यौरी, क्वार्क मॉडल आदि का खण्डन भी था । एक घण्टा का समय निर्धारित था । प्रोफेसरों के आग्रह पर बोलते-बोलते समय डेढ घण्टा हो गया और लगभग आधा घण्टा शंका समाधान का रहा । M.Sc. (बायोटेक्नोलॉजी) के एक छात्र ने कहा, "जिस सिद्धान्त का आप खण्डन कर रहे हैं, उस पर नोबेल पुरस्कार मिल चुका है । आपको नोबल पुरस्कार मिले तब संसार आपकी बात मानेगा।" मैंने कहा, "नोबेल पुरस्कारों से घबराने वा प्रभावित होने की कोई आवश्यकता नहीं है । जिस सिद्धान्त पर कोई पुरस्कार मिलता है, उसके खण्डन पर भी वही पुरस्कार मिल सकता है ।" अन्त में प्रो. वाइस चांसलर प्रो. जयेशजी देशकर ने कहा, "स्वामीजी ! आपने हमारी विज्ञान सम्बन्धी धारणाओं को आज हिला दिया है । यदि आप वैदिक फिजिक्स पर कोई पुस्तक लिखें तो हम उसे विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में सम्मिलित करना चाहेंगे । जब आपका संकल्प पूर्ण हो जाये तब सूरत विश्वविद्यालय प्रथम विश्वविद्यालय होगा जो आपको सर्वप्रथम आमन्त्रित करना चाहेगा ।"

सभा विसर्जन के पश्चात् अल्पाहार के समय कई प्राध्यापकों ने भी मुझे कुछ लिखने का आग्रह किया । छात्र व छात्राओं की भीड़ ने घेर लिया और कहा, "हम क्या करें ? आपने तो हमारी पढ़ाई को गलत सिद्ध कर दिया । अब आप बतायें कि हम क्या व कैसे पढ़ें ? आप वेबसाइट् के माध्यम से हमें कुछ देते रहें ।" मैंने सबसे विनम्रतापूर्वक कहा, "कम से कम 7–8 वर्ष मुझसे कुछ भी आशा नहीं करें ।" इसीलिये मैंने एक महत्वपूर्ण 'वेद विज्ञान शोध प्रक्रिया' नामक पुस्तिका लिखी जिसमें मैंने इस बात का खुलासा किया है कि क्यों मैं 7–8 वर्ष तक कुछ लिखना वा व्याख्यान देने की इच्छा नहीं रखता हूँ ? कई विद्वान् हमारे संकल्प पर प्रश्न करते हैं कि वैज्ञानिकों ने बात नहीं मानी तब क्या होगा ? कसौटी क्या होगी, उन्हें यह पुस्तिका अवश्य पढ़नी चाहिये । हमारी प्रक्रिया कैसे वर्तमान में शोधरत विद्वानों से विशिष्ट व प्राचीन परम्परा के निकट है, यह जानने के लिये भी यह पुस्तिका अवश्यमेव पठनीय है ।कुछ समय पश्चात्

जनवरी 07 में मैं पुनः अपने तत्कालीन कार्यालय प्रमुख प्रियवर अमित शास्त्री 'व्याकरणाचार्य' को लेकर भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र, मुम्बई पहुँचा। एक सप्ताह तक पूर्व परिचित वैज्ञानिकों से संवाद चलता रहा। इस बार कुछ नये वैज्ञानिक जो विज्ञान भारती से जुड़े थे व कुछ इंजीनियर जो आर्य समाज से जुड़े थे, मिलने आये। विज्ञान भारती के वैज्ञानिकों ने अपने-अपने शोध कार्य का हमें परिचय कराया जिसे मैंने उचित नहीं माना। पातंजलि योग सूत्रों की मनगढ़न्त व्याख्या का मैंने प्रतिवाद किया। मुम्बई से लौटते हुये सूरत (गुजरात) के कृभको उर्वरक संयन्त्र के परिचालन निदेशक श्री बंसलजी आग्रह पर मैं अपने सहयोगी संरक्षक श्री अशोककुमार बंसल, सूरत विश्वविद्यालय की प्रोफेसर डॉ. सविताजी गौड़ एवं निर्मिलेशजी आर्य के साथ कृभको के सभागार में पहुँचा। वहाँ के इंजीनियर्स, महाप्रबन्धक व अन्य उच्चाधिकारियों ने "सृष्टि का मूल कारण" विषय पर डेढ़ घण्टे का व्याख्यान रखा। उसके पश्चात् भीनमाल आया। कुछ कालोपरान्त एक विद्वान् आचार्य निरंजनजी, जो अमेरिका से M. Tech. व PhD हैं तथा वैदिक वांगमय् के भी विद्वान् हैं के परामर्श पर अमरीकी वैज्ञानिक डेविड ग्रिफिथ द्वारा लिखित 'इण्ट्रोडक्शन टू एलीमेंटरी पार्टिकल्स' को भारतीय विज्ञान संस्थान, बैंगलोर के पुस्तकालय से छाया-प्रति करवाकर मंगाकर पढ़ा। यह पुस्तक श्री आचार्य निरंजनजी ने मूल कण विषयक शंकाओं के पूर्ण समाधानार्थ पढ़ने की सलाह दी थी, परन्तु हमारा पढ़ना कुछ अलग ही होता है। प्रायः विद्वान् वा विद्यार्थी उच्च स्तरीय पुस्तक को प्रमाण मानकर पढ़ते हैं परन्तु हममें बचपन से ही यह आदत नहीं थी। जो पुस्तक हमें सन्तुष्टि के लिये सुझायी, उसी पुस्तक ने आधुनिक पार्टिकल फिजिक्स पर अनेक जटिल प्रश्न उत्पन्न कर दिये, जिनका समाधान नहीं हो पा रहा है। इस बीच यह और उल्लेखनीय है कि बनारस के युवा आर्य समाजी कर्मठ कार्यकर्ता श्री प्रमोदजी आर्य के आग्रह पर बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस के धातु अभियान्त्रिकी विभाग में अगस्त 2005 में सृष्टि विषय पर व्याख्यान रखा। यद्यपि मैंने श्री प्रमोदजी आर्य को सलाह दी थी कि व्याख्यान का आयोजन विश्वविद्यालय के भौतिक विज्ञान विभाग एवं संस्कृत-वेद विभाग के संयुक्त तत्वावधान में ही रखवाना परन्तु श्री प्रमोदजी आर्य को भय था कि बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय देश का प्रसिद्ध विश्वविद्यालय है। यदि वहाँ के वैज्ञानिक कठिन प्रश्न करने लगे तो आर्य समाज को लज्जित होना पढ़ेगा। इस कारण वे वहाँ सम्पर्क नहीं कर सके वा किया। एक घण्टे के व्याख्यान के पश्चात् धातु अभियान्त्रिकी विभाग के प्रोफेसर्स ने कोई प्रश्न ही नहीं किये। मैं तथा आर्य समाजी कार्यकर्ता समझ गये कि इन वैज्ञानिकों की समझ में ही पूरा व्याख्यान नहीं आया है। तब उन्हें भौतिकी विभाग में व्याख्यान न कराने पर पश्चाताप हुआ। फरीदाबाद सैक्टर-७ की मान्या माता श्रीमती प्रकाशदेवीजी, श्री बलवीरसिंहजी मलिक, श्री नरेन्द्रजी मलिक एवं श्री अजीतकुमारजी आर्य आदि आर्यों के प्रयास से फरीदाबाद (हरियाणा) के एक स्नातकोत्तर महाविद्यालय में भी कार्यक्रम रहा परन्तु वहाँ के श्रोताओं का विशेष स्तर देखा नहीं। हमसे कोई प्रश्न

किसी प्रोफेसर या छात्र-छात्रा ने नहीं किये । 31 अक्टूबर 07 को हमारे न्यासी श्री मनोहरलालजी आनन्द (फरीदाबाद) के आग्रह पर महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक के संस्कृत विभाग ने हमारे व्याख्यान का आयोजन किया । हमने श्री आनन्दजी के माध्यम से संस्कृत विभाग के प्रोफेसर श्री आचार्य डॉ. बलवीरजी को संदेश भेजा कि व्याख्यान भौतिक विज्ञान विभाग में ही रखना, संस्कृत वालों की समझ में नहीं आयेगा। श्री आचार्य डॉ. बलवीरजी ने बताया कि भौतिक विज्ञान के विभागाध्यक्ष ने उनकी बात को कोई महत्व नहीं दिया । अन्ततः व्याख्यान संस्कृत विभाग में ही हुआ । हमने संस्कृत विभाग के प्राध्यापकों से कहा कि हमारी पुस्तक का अंग्रेजी संस्करण भौतिक विभागाध्यक्षजी को भेंट करके कहना कि इसमें कमियां निकालें । आज तक हमारे पास कोई पत्र नहीं आया । साक्षात् सम्पर्क हमारा उनसे हुआ नहीं ।

वस्तुतः विज्ञान वाले संस्कृत वालों को मूर्ख ही मानते हैं । हमें यदि उनसे मिलने का अवसर मिलता तो वह विश्वविद्यालय भी सूरत विश्वविद्यालय की भाँति हमारे साथ आत्मना जुड़ जाता । हमारी पुस्तक को आकोला (महाराष्ट्र) में कृषि विद्यापीठ (विश्वविद्यालय) से अपारम्परिक ऊर्जा व विद्युत अभियान्त्रिकी विभाग के अध्यक्ष व प्रोफेसर पद से सेवानिवृत वैज्ञानिक डॉ. वसन्त कुमारजी मदनसुरे ने पढ़ा, तो हमारे न्यास से ही जुड़ गये । मार्च 07 में हमारे वेद विज्ञान मन्दिर, भागल भीम में आयोजित वेद-धर्म-विज्ञान सम्मेलन में वे पधारे तथा प्रतिवर्ष 6000/— रू. सहयोग की घोषणा कर गये, जो बराबर कर रहे हैं । उनका यहीं रहकर स्थायी सेवा देने की भी इच्छा है, जो हमारे लिये प्रसन्नता की ही बात है । इस बार फरवरी 08 में वेद-धर्म-विज्ञान सम्मेलन में अहमदाबाद के निष्ठावान् आर्य समाजी कार्यकर्ता श्री पूनमचन्दजी नागर, एक उच्च स्तरीय वैज्ञानिक मान्यवर प्रोफेसर सत्यदेवजी वर्मा को लेकर पधारे । प्रो. वर्मा साहब टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फण्डामेंटल रिसर्च, मुम्बई में सायंटीफिक रिसर्च ऑफीसर, लुईजियाना यूनिवर्सिटी, अमेरिका में भौतिक विज्ञान एवं एस्ट्रोनॉमी के प्रोफेसर तथा गुजरात विश्वविद्यालय के विज्ञान संकाय के डायरेक्टर रहे तथा डॉ. होमी जहांगीर भाभा जिनके नाम से ही मुम्बई के अणु केन्द्र का नाम भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र रखा गया है, श्री विक्रम साराभाई जैसे विश्वविख्यात वैज्ञानिकों के साथ काम किया है तथा शिकागों विश्वविद्यालय से Ph.D किया व अमरीकी अन्तरिक्ष एजेन्सी नासा से भी सम्बन्ध रहा है । हमारी उनसे विशेष चर्चा समयाभाव के कारण नहीं हो सकी । स्थानीय श्रोताओं के स्तर को दृष्टिगत रखकर वेद-धर्म-विज्ञान सम्मेलन में हम विशुद्ध विज्ञान पर बोले भी नहीं, केवल अपने लक्ष्य की महत्ता व आवश्यकता को ही प्रतिपादित किया । इस कारण वर्मा साहब व हमारा विशेष जुड़ाव नहीं हुआ । जब हम 23 मई 2008 को अहमदाबाद, कांकरिया आर्य समाज पहुँचे तो हमारे न्यासी श्री पूनमचन्दजी नागर हमें प्रो. वर्मा साहब के निवास पर ले गये। मेरे साथ हमारे न्यास के सहमन्त्री प्रिय जनकसिंह भी थे । डेविड ग्रिफिथ की पुस्तक

पर हमने लगभग 47 प्रश्न तथा कुल मिलाकर 129 प्रश्नों को हम सुलझाने हेतु ही उनके पास गये थे । दो दिन लगभग 3–3 घंटे अत्यन्त आत्मीयता पूर्ण संवाद हुआ । वैज्ञानिकों में सत्य स्वीकार की प्रवृति सहज ही होती है, इसी कारण उन्होंने अनेक प्रश्नों के उत्तर के लिये अपने एक मित्र श्री राजशेखरन (चैन्नई) व भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र से सम्पर्क करने की सलाह दी । इस संवाद से हमारी निकटता विशेष बढ़ी । हम भी मान्यवर वर्मा साहब के आर्योचित व्यवहार व मेधा से अति प्रभावित हुये । इस संवाद का श्री पूनमचन्दजी नागर पर विशेष प्रभाव पड़ा और उन्हें हमारे लक्ष्य आदि का स्पष्ट पता चला । फिर वहीं से हम व प्रिय जनकसिंह मुम्बई 25–5–08 को पहुँचे । हर बार की भाँति हमारे विशेष हितैषी श्री विजय कुमारजी भल्ला साहब हमें लेने आये और वहीं गैस्ट हाऊस में उत्तम व्यवस्था की । मान्यवर श्री डॉ. मित्रा साहब के निवास पर 25–5–08 को रात्रि में पहुँचे । पार्टिकल फिजिक्स सम्बन्धी प्रश्नों पर चर्चा करते समय डॉ. मित्राजी ने सरलता से कहा 'यह विषय मैं विशेष नहीं जानता हूँ । मेरा विषय खगोल भौतिकी रहा है । 30 वर्ष पूर्व M.Sc. के समय जो पढ़ा था उसी के आधार पर ही पार्टिकल फिजिक्स पर चर्चा करूंगा।" मैंने उनसे कहा आप अपने स्तर के अन्य वैज्ञानिक से हमारा सम्पर्क कराने का कष्ट करें जिसका पार्टिकल फिजिक्स वा क्वांटम क्रोमो डायनामिक्स पर विशेष अधिकार हो । डॉ. मित्रा साहब ने कहा भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र (BARC) में इस विषय के वैज्ञानिक नगण्य हैं । नाभिकीय परमाणु भौतिकी के तो कई वैज्ञानिक हैं परन्तु पार्टिकल फिजिक्स के विशेषज्ञ नहीं हैं तथा इस विषय की भारत में कोई प्रयोगशाला भी नहीं है ।" तब उन्होंने दूरभाष द्वारा कुछ वैज्ञानिकों से सम्पर्क करके हमारे विषय में चर्चा करने का प्रयास किया। दो वैज्ञानिक न्यूजीलैण्ड व हालैण्ड गये हैं, ऐसी जानकारी मिली । फिर उन्होंने हमें आश्वस्त किया कि 1–2 दिन में कोई इस विषय का वैज्ञानिक पता करके हमारे निवास (गेस्ट हाऊस) भेजने का प्रयास करेंगे । करीब डेढ़ घंटे फिजिक्स पर चर्चा होती रही । मैंने अपनी पुस्तक का हवाला देते हुये कहा कि क्वार्क वास्तव में हेड्रोन्स आदि का निर्माण नहीं करते बल्कि ऐसा प्रतीत होता है कि ऊर्जा जिसे प्रोटोन्स आदि के विखण्डन में काम लिया जाता है, से ही क्वार्कसादि नवीन कणों का निर्माण होता होगा जिससे हमें ऐसा भ्रम होता हो कि प्रोटोन्स आदि इन्हीं से मिलकर बने हैं । इस पर डॉ. मित्रा साहब ने कहा, इस विषय में अभी निकट भविष्य में विश्व की सबसे बड़ी पार्टिकल फिजिक्स की प्रयोगशाला CERN जो स्वीट्जरलैण्ड में है, में बहुत महत्वपूर्ण प्रयोग होने वाला है । उस प्रयोग में विश्व के वैज्ञानिक हिग्स बोसोन नामक कण की खोज में जुटेंगे । यदि इसमें वैज्ञानिकों को सफलता मिल गयी तो नोबेल पुरस्कार निश्चित ही मिलेगा । पाठकों को अवगत करा दें कि एडिनबरा विश्वविद्यालय के प्रो. पीटर हिग्स ने 1960 में विश्व में सर्वप्रथम एक कण विशेष की परिकल्पना प्रस्तुत की थी जिससे समस्त ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति हुई है । वैज्ञानिक जगत् में कृतज्ञता का एक बहुत

बड़ा सद्गुण होता है। जो वैज्ञानिक जिस किसी कण की खोज करता है अथवा परिकल्पना भी करता है, उस कण को दूसरे वैज्ञानिक, खोजकर्ता वा परिकल्पनाकर्ता वैज्ञानिक के नाम से प्रसिद्ध करते हैं। इसी कारण पीटर हिग्स नामक वैज्ञानिक द्वारा परिकल्पित कण का नाम हिग्स बोसोन रख दिया जिसे आज तक खोजा ही नहीं जा सका है। हिग्स पार्टिकल के विषय में जो भी विचार अब तक रखे गये हैं, उन्हें मैंने अभी-अभी ही कुछ पढ़ा है। वैसे इसे खोजा ही नहीं जा सका है, तब उसके गुणों के विषय में विशेष अनुमान भी अभी नहीं है पुनरपि हमने अपनी पुस्तक में क्वार्क मॉडल नामक बिन्दु पर यह धारणा प्रस्तुत की थी कि अनेक उत्पन्न होते प्रतीत होने वाले मूल कणों में से कोई भी मूल कण नहीं है। ऊर्जा युक्त कणों के तीव्र आघात से जो कण टूटकर अन्य कणों में बदल जाते हैं, वे वस्तुतः विखण्डित कण के अन्दर नहीं होते बल्कि ऊर्जा व द्रव्य के रूपान्तरण से सर्वथा नवीन कण उत्पन्न हो जाते हों, ऐसी सम्भावना हो सकती है। इसी कारण अनेक़ प्रक्रियाओं में चाहे वे विखण्डन हो, क्षय हो वा संलयन हो, उनमें ऊर्जा व द्रव्यमान का संरक्षण सदैव सिद्ध नहीं हो पाता है। दो कणों के बीच इण्टेरेक्शन्स में भी इसका उल्लंघन देखा जाता है। डॉ. मित्राजी के अनुसार इस बात का खुलासा अभी निकट भविष्य में C.E.R.N. में होने वाले महत्वपूर्ण प्रयोग द्वारा हो सकेगा। उनके विशेष श्रद्धायुक्त आग्रह पर भोजनादि करने के पश्चात् मैं और प्रिय जनकसिंह मित्रा साहब के आवास से पुनः अपने गेस्ट हाऊस रात्रि के लगभग 10.30 बजे आ गये। अगले दिन वहीं के हमारे चिर परिचित वरिष्ठ वैज्ञानिक मान्यवर डॉ. जगदीशचन्द्रजी व्यास पधारे और लगभग 1 घंटा विज्ञान व राष्ट्रिय परिस्थितियों पर चर्चा हुई। दिनांक 26 को दो आर्य समाजी इंजीनियर श्री सुनीलकुमारजी अग्रवाल तथा एम. एल. राजपूतजी पधारे और उसके पश्चात् पुनः डॉ. व्यास साहब पधारे उनसे क़रीब डेढ़ घंटा विज्ञान विषय पर चर्चा की। क्वांटम क्रोमो डायनामिक्स तथा पार्टिकल फिजिक्स उनका भी विषय न होने से विशेष चर्चा नहीं हो पायी। इधर डॉ. मित्रा साहब व डॉ. व्यासजी दोनों ने ही ऐसे वैज्ञानिक ढूंढ़ने में कठिनाई अनुभव की जो हमें हमारे प्रश्नों के सन्तोषजनक उत्तर दे सकें। अगर नाभिकीय भौतिकी से सम्बन्धित प्रश्न होते तो कई वैज्ञानिक उपलब्ध हो सकते थे। मैंने मित्रा साहब को कहा, "टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फण्डामेंटल रिसर्च, मुम्बई जो भारत का अति प्रसिद्ध शोध संस्थान है, वहाँ यदि आपका परिचित कोई अच्छा वैज्ञानिक हो तो, उनसे ही चर्चा की जाये। उन्होंने उत्तर दिया, 'वहाँ के वैज्ञानिक अपने को अधिक ही बड़ा मानते हैं... हमारी अपेक्षा बहुत ही बड़ा.. इसीलिये वे मिलते ही नहीं और मेरा परिचय भी नहीं है'" कई वर्तमान वैज्ञानिक धारणाओं पर जब मैंने प्रश्न चिन्ह लगाये तो डॉ. मित्राजी का कहना था कि बड़े लोग कुछ न कुछ करते हैं, चाहे वह विशेष कुछ न हो.. बड़े हैं इस कारण उनके पेपर प्रकाशित भी हो जाते हैं। दिनांक

30-5-08 को रात्रि को डॉ. मित्रा साहब ने एक न्यूक्लियर वैज्ञानिक मा. डॉ. स्वप्नदासजी को मुझसे मिलने गेस्ट हाऊस भेजा। बड़े विनयशील वैज्ञानिक श्री डॉ. दासजी ने आते ही विनम्रतापूर्वक मुझसे कहा, "स्वामीजी ! मैं पार्टिकल फिजिक्स व क्वांटम क्रोमो डायनामिक्स के विषय में बहुत कम जानता हूँ। मैं न्यूक्लिर सायंटिस्ट हूँ। अपनी बुद्धि के अनुसार कुछ-कुछ उत्तर देने का प्रयास करूंगा।" उनकी इस बात से मैं बहुत प्रभावित हुआ। हम वैदिक लोग भले ही 'विद्या ददाति विनयम्' का पाठ पढ़ते-पढ़ाते रहें परन्तु इसके साकार रूप को देश के वैज्ञानिकों में ही देखा जा सकता है। हमारे विद्वान् तो अहंकार से ही भरकर एक दूसरे को नीचा दिखाने में ही लगे दिखाई देते हैं जो किसी भी उच्च वैज्ञानिक में मैंने नहीं देखा। करीब डेढ़ घंटा मेरी डॉ. स्वप्नदासजी से बहुत सारगर्भित चर्चा हुई। वस्तुतः कई प्रश्नों का उत्तर विश्व का कोई श्रेष्ठ वैज्ञानिक जो पार्टिकल फिजिक्स व क्वांटम क्रोमो डायनामिक्स का विशेषज्ञ हो, ही दे सकता है तथा कई प्रश्नों का उत्तर कोई भी नहीं दे सकता क्योंकि इस विषय में सायंस अभी स्वयं किंकर्तव्यमूढ़ है। डॉ. दासजी ने बताया कि इस विषय की प्रयोगशाला को बनाना किसी एक देश के वश की बात नहीं है, सिवा अमेरिका के। विश्व की सबसे बड़ी प्रयोगशाला C.E.R.N. स्विट्जरलैण्ड में है जो विश्व के तीस देशों ने मिलकर बनाई है। इस पर आधिपत्य अमरीका व यूरोप देशों का ही है। भारत का तो अत्यल्प अंश ही है। उसमें होने जा रहा हिग्स पार्टिकल की खोज का प्रयोग एक बहुत महत्वपूर्ण खोज होगी।

अब मैं हिग्स पार्टिकल की खोज जिसे विश्व के पार्टिकल फिजिसिस्ट अत्यन्त महत्वपूर्ण मान रहे हैं, की मैं उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा हूँ। जब इस कण के गुण-कर्म व स्वभाव को आधुनिक वैज्ञानिक स्पष्ट करेंगे तब ही मैं यह कह सकूंगा कि वह कण भी मूल कण है वा नहीं? वैसे मेरे वर्तमान अनुमान के अनुसार हिग्स बोसोन भी मूल कण नहीं हो सकता इसका कारण मैं अभी स्पष्ट नहीं करूंगा। विज्ञान अनेक विशाल संसाधनों व बहुत बड़े संगठन के साथ आगे बढ़ रहा है इधर मैं एकाकी सर्वथा संसाधनहीन बिना किसी मार्ग दर्शक के विज्ञान की खोजों को सूक्ष्मतया देख रहा हूँ और अभी वैदिक विज्ञान पर उनसे कुछ भी नहीं कहता हूँ। वर्तमान विज्ञान कहाँ स्वयं को असहाय पाता है, यह देखना मेरी इस समय सर्वोच्च प्राथमिकता है। डॉ. मित्रा साहबडॉ. व्यास साहब को मैंने निवेदन कर दिया है कि अभी मैं आपके विज्ञान की कमियां खोजने में ही जुटा हूँ। वैदिक विज्ञान पर अभी मैं कुछ भी कहने में असमर्थ हूँ। मेरा उस विषय में कोई भी मार्ग दर्शक नहीं है। निरूक्त, ब्राह्मण ग्रन्थ, दर्शन व उपनिषदों पर जो वर्तमान में चिन्तन उपलब्ध है, उससे मैं कदापि सन्तुष्ट नहीं हूँ। वेद भाष्यों की

स्थिति भी अच्छी नहीं है । पूज्यपाद भगवद् दयानन्दजी महाराज के ग्रन्थों व उन्हीं के भाष्यों में ही वैशिष्ट्य दिखाई देता है जिसे पूर्ण रूपेण समझने में अभी समय लगेगा । उसी शैली पर निरूक्तादि सभी ग्रन्थों को नये सिरे से विचारना होगा । डॉ. मित्रा साहब भी कभी पूछते हैं कि क्या कोई पुस्तक नहीं लिख रहे हैं ? मैं कहता हूँ, अभी नहीं। अब तभी लिखूँगा, जब मैं अपने को लिखने का अधिकारी समझूंगा तथा वर्तमान विज्ञान की अनेक बाधाओं, समस्याओं का समाधान करने का सामर्थ्य प्राप्त कर लूंगा । ऐसा करना तभी सम्भव होगा जब मैं निरूक्त, ब्राह्मण ग्रन्थ, दर्शन व वेद भाष्यों में हुये विज्ञान को उद्घाटित करने की योग्यता अर्जित कर लूंगा । तब लिखा वह ग्रन्थ विश्व के वैज्ञानिक जगत् में एक नयी क्रान्ति का सूत्रपात करेगा तथा सारे वैज्ञानिक जगत् को वेद व आर्ष ग्रन्थों के प्रति श्रद्धानवत करने को विवश करेगा । यह पवित्र प्राणप्रिय वेद समस्त मानव जाति के लिये विद्या व धर्म का ग्रन्थ बन सकेगा, तभी मेरा लक्ष्य सिद्ध होगा और इस महत्तम कार्य हेतु मैंने वि. सं. 2077 (सन् 2021) की शिवरात्रि निश्चित की है । पहिले 2074 थी फिर कई मित्रों के आग्रह व दबाववश समय सीमा समाप्त करो, मैंने समय सीमा समाप्त तो नहीं की परन्तु तीन वर्ष बढ़ा अवश्य दी है । मैं उस पवित्र व महान् दिवस की प्रतीक्षा सदैव करता हूँ, जिस दिन मेरा व्रत पूर्ण होगा । मेरे आत्मीय आदरणीय वैज्ञानिकों का सतत सहयोग रहता है । इसीलिये मैं सर्वाधिक श्रेय श्री विजयकुमारजी भल्ला व डॉ. आभासकुमारजी मित्रा साहब, डॉ. व्यासजी को ही देता हूँ । यदि भल्ला साहब बैंगलोर में न मिलते तो मैं इस ओर बढ़ता भी कि नहीं नहीं, यह कह नहीं सकता। परमात्मा उनको चिर यश प्रदान करे। अन्य सबके यश की कामना के साथ ।

आचार्य अग्निव्रत "नैष्ठिक"

श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास

(वैदिक एवं आधुनिक भौतिक विज्ञान शोध संस्थान)

वेद विज्ञान मन्दिर, भागल-भीम,

वाया भीनमाल, जिला-जालोर (राज.)

Mob. **9414182173**

।। ओ३म् ।।

महत्वाकांक्षी -

वेद विज्ञान अनुसंधान योजना

- आशा का नया सूर्योदय

श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास कीं स्थापना वैशाख अमावस्या वि. सं. २०६० तदनुसार ०१ मई २००३ को आर्य समाज के प्रख्यात लेखक व समीक्षक पूज्य श्री आचार्य अग्निव्रत जी नैष्ठिक ने भीनमाल, जिला जालोर (राज.) में की थी । किन्हीं कारणवश-न्यास का मुख्यालय भीनमाल से अस्थायी रूपेण हटाकर पाली-मारवाड़ में एक किराये के मकान में करना पड़ा । वहाँ ग्यारह माह रहने के पश्चात् मुख्यालय भीनमाल में कर लिया । भीनमाल नगर के निकटस्थ ग्राम भागल-भीम से २ किमी. दूर रोड़ के किनारे सवा तीन बीघे भूमि क्रय कर ली । हमारे न्यास के पाँच उद्देश्य हैं । १. वेद रक्षा अभियान २. गो-कृषि-पर्यावरण रक्षा अभियान ३. राष्ट्ररक्षा अभियान ४. समाज सुधार अभियान ५. आर्य युवा निर्माण अभियान । न्यास प्रमुख आचार्य श्री को मुम्बई के अनेक उच्च कोटि के वैज्ञानिकों तथा न्यास के वर्तमान संरक्षक पूज्य आचार्य स्वदेशजी महाराज (मथुरा) के द्वारा दिये परामर्श पर तथा इस क्षेत्र में पूज्य आचार्य जी की प्रखर प्रतिभा एवं रूचि के कारण वर्तमान में हमारा न्यास सर्वाधिक महत्वपूर्ण वेद रक्षा अभियान के अन्तर्गत वेद तथा भौतिक विज्ञान पर शोध हेतु ही विशेषतया समर्पित है । यह कार्य सबसे महत्वपूर्ण तथा कठिन है। इस प्रकार का कार्य सम्भवतः भारत में अन्यत्र कहीं भी नहीं हो रहा है फिर विश्व में कहां हो सकता है ? इसके लिए सर्वप्रथम भवन बनाने की आवश्यकता होती है । वेद विज्ञान मन्दिर नाम से वेद-विज्ञान शोध संस्थान भागल भीम में निर्माणाधीन है, इसका कुल अनुमानित लागत ७३ लाख रूपया है । जिसमें शोध कक्ष, आवास कक्ष, यज्ञशाला, गोशाला, कर्मचारी आवास, अतिथिशाला, जल संरक्षण हेतु बड़े हौज आदि निर्माण, चारदीवारी, पुस्तकालय, कम्प्यूटर कक्ष सभा भवन आदि बनाने होंगे । विशिष्ठ अतिथि कक्ष व कार्यालय भवन जिसमें लगभग ९ लाख रूपया व्यय हुआ है, तो बन चुका है । अभी इसी में हमारा कार्य चल रहा है । इस समय पूज्य आचार्य श्री के अतिरिक्त तीन कार्यकर्ता (कार्यालय प्रमुख, प्रचारक व सेवक) वेतन पर कार्यरत हैं । श्री आचार्यजी पूर्ण समर्पित व नैष्ठिक ब्रह्मचारी हैं व प्रबन्धक भी अवैतनिक है । एक भैतिक वैज्ञानिक भी अगस्त ०८ में आने वाले हैं । वर्तमान में कुल खर्च लगभग ३०-३५ हजार मासिक चल रहा है । प्रयोगशाला की आवश्यकता को श्री आचार्यजी अनुभव नहीं करते। उन्होंने इस हेतु भाभा परमाणु

अनुसंधान केन्द्र, मुम्बई के थ्यौरीटीकल एस्ट्रोफिजिक्स सैक्शन के हैड प्रसिद्ध वैज्ञानिक मान्यवर डॉ. आभास कुमारजी मित्रा से चर्चा की है। भविष्य में उनका विचार विश्व के अन्य वैज्ञानिकों से भी यही चर्चा करने का है कि वे अपने मस्तिष्क तथा वैदिक वाङ्मय से कुछ ऐसे रहस्यों को खोजकर दें जिस पर वे वैज्ञानिक अपनी प्रयोगशालाओं में शोध करें। इससे उन वैज्ञानिकों को भी शोध हेतु नये - नये बिन्दु मिलेंगे तथा हमारे वेद विज्ञान की प्रमाणिकता को वैज्ञानिक जगत् स्वीकार करेगा। इसके उपरान्त विश्व का प्रबुद्ध वर्ग इसके प्रति आकृष्ट होगा।

उल्लेखनीय है कि आचार्य श्री द्वारा लिखित शोध पुस्तिका को विषय वस्तु पर भाभा परमाणु अनुसन्धान केन्द्र मुम्बई के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के वैज्ञानिकों तक से आचार्य जी का लम्बासंवाद चलता रहा है। विशेष परिज्ञान "वैज्ञानिकों के बीच मेरे अनुभव" नामक लेख पढ़ने से हो गया होगा।

मान्यवर! इस समय आचार्य जी अकेले ही वैदिक वाङ्मय, पाणिनी व्याकरण, निरूक्त आदि के साथ-साथ आधुनिक भौतिक विज्ञान आदि जो संसार का कठिनतम पाठ्यक्रम है, को स्वयं ही पढ़ रहे हैं। वर्तमान में हमारी आवश्यकतायें निम्नानुसार है (भवन की अनुमानित लागत के अतिरिक्त)

क्रमांक	विवरण	मासिक व्यय (न्यूनतम लगभग)
१.	२ सेवकों का वेतन	७,०००/-
२.	कार्यालय/पुस्तकालय प्रमुख	६,०००/-
३.	शोध सहायक उपाचार्य	८,०००/-
४.	विद्युत, जल, दूरभाष, इण्टरनेट व्यय	१०,०००/-
५.	अवैतनिक व्यवस्थापक साधु	/-
६.	प्रचारक	६,०००/-
७.	५-६ व्यक्तियों का भोजन, वस्त्र, चिकित्सा आदि व्यय	१२,०००/-
८.	यज्ञ व गो आदि का व्यय	५,०००/-
९.	पत्र, पत्रिकायें, स्टेशनरी आदि व्यय	१०,०००/-
	कुल मासिक व्यय लगभग	६४,०००/-

उपर्युक्त मासिक व्यय तुरन्त तो नहीं परन्तु धीरे-धीरे आवश्यक हो जायेगा। अभी तत्काल लगभग ४०,००० रूपये मासिक तथा कुछ भवन व पुस्तकालय हेतु वांछित राशि की विशेष आवश्यकता है। इस जिले में कुछ राष्ट्र विरोधी संगठन सक्रिय हैं, इस कारण जन जागरण हेतु वैदिक राष्ट्र रक्षा समिति का गठन इसी न्यास के

अन्तर्गत किया गया है । उसका व्यय भी न्यास को वहन करना पड़ता है ।हमारे कई न्यासी अपने सामर्थ्य से अधिक आर्थिक सहयोग कर रहे हैं परन्तु वे संख्या में बहुत कम हैं पूज्या माता प्रकाशदेवीजी एवं श्री बलबीरसिंहजी मलिक के प्रयास से आर्य समाज सैक्टर-७ (हरियाणा) मथुरा के दानवीर श्री चौधरी तोरनसिंहजी आर्य आदि का आर्थिक आधार व न्यास संरक्षक पूज्यपाद आचार्य स्वदेशजी महाराज का प्रोत्साहन न मिलता तो हमारे पूज्यपाद आचार्यजी का आगे बढ़ना सम्भव नहीं होता । अब हमारे न्यासी श्री पूनमचन्दजी नागर व श्री सुरेशचन्द्रजी अग्रवाल आर्य समाज, कांकरिया, अहमदाबाद व वहाँ के कुछ दानवीर तथा जोधपुर के श्री जयसिंहजी गहलोत, श्री किशनलालजी व श्री सोमेन्द्रजी आगे आ रहे हैं । परन्तु अभी भी हम विशेष आर्थिक संकट में हैं । कार्यालय व अतिथि कक्ष बनाने में हीं हम पर विशेष आर्थिक भार आ पड़ा है । इसी में आवास का काम फिलहाल चल रहा है । पूज्य आचार्यजी प्रचारार्थ जा नहीं सकते हैं क्योंकि इससे अध्ययन बाधित होगा और बिना अध्ययन इतना बड़ा कार्य होना सम्भव नहीं है । अतः आचार्यजी को पूर्ण आर्थिक निश्चिन्तता अत्यावश्यक है । इसी में इसके लिये सभी वेदभक्तों (आर्यों व पौराणिकों), विज्ञान-प्रेमियों, भारतीय संस्कृति पर गर्व करने वाले तथा मानव मात्र के हित चिन्तकों से विनम्र प्रार्थना है कि वे इस महान् कार्य में उदार हृदय से तन-मन-धन से सहयोग करने का अनुग्रह करें व करावें । आपका यह धन इस अतीत पावन ज्ञान-विज्ञान - यज्ञ में ही आहुत होगा जिसमें आचार्य जी ने अपने को सर्वात्मना आहुत कर दिया है अधिक जानकारी हेतु इसका प्रथम लेख पढ़ने का कष्ट करें ।

हमारे धनी-मानी महानुभाव ! जब किसी महान् व्रती ने वेद रक्षा को ही अपना जीवन व्रत बनाया है तब आप हम व सबको कम से कम धन की कमी को तो बाधा नहीं बनने देना चाहिये। हम धन दान का व्रत तो लें ही । किन्तु उन लोगों से हमारा विनम्र अनुरोध है, जिनकी आजीविका अण्डा, माँस, तम्बाकू, गुटखा, सिगरेट, बीड़ी, शराब, तस्करी, वैश्यालय, कत्लखाने आदि अनैतिक साधनों से है, उनसे हम धन लेना स्वीकार नहीं कर सकेंगे । सुपात्र दानी महानुभाव आप हमारे यज्ञ में निम्न प्रकार से सहयोगी बन सकते हैं ।

१. प्रतिवर्ष न्यूनतम १२,०००/- रूपये अथवा एक बार न्यूनतम एक लाख रूपये का दान करके सहयोगी संरक्षक बन सकते हैं । सभी सहयोगी संरक्षकों को न्यास की वार्षिक बैठक जो प्रायः वार्षिकोत्सव के अवसर पर हुआ करेगी, में विशेष रूपेण आमन्त्रित किया जायेगा । तथा उत्सव में अभिनन्दित किया जाया करेगा। इसके साथ इनका नाम न्यास की विज्ञप्ति तथा वेब साइट में प्रविष्ट होगा ।

२. प्रतिवर्ष न्यूनतम ६,०००/- रूपये अथवा एक साथ न्यूनतम ५०,०००/- रूपये देकर विशेष आमन्त्रित सदस्य बन सकते हैं । इनको भी वार्षिकोत्सव के अवसर पर विशेष रूपेण आमन्त्रित किया जाता रहेगा ।

३. वार्षिक न्यूनतम १,०००/- रूपये देते रहकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं।
४. अपने नाम से कमरा, यज्ञशाला आदि बनवा सकते हैं। इनका भी वार्षिकोत्सवों पर विशेष सम्मान किया जायेगा।

उपर्युक्त चारों प्रकार के सहयोगी महानुभावों तथा अन्य दानदाताओं की इच्छा पर न्यास द्वारा प्रकाशित साहित्य निःशुल्क भेंट किया जाता रहेगा। जो महानुभाव स्वयं दान नहीं कर सकें, वे दूसरों को प्रेरित करके कम से कम ८ सदस्य आदि बनाकर स्वयं निःशुल्क उसी श्रेणी के सदस्य या सहयोगी संरक्षक आदि बन सकते हैं।

५. विद्यार्थी, किसान, श्रमिक आदि अपनी पवित्र आहुति श्रद्धा व सामर्थ्य के अनुसार दे सकते हैं। आई. आई. टी. इंजीनियरिंग व विज्ञान के उच्चतर कक्षाओं के छात्र अपना बौद्धिक सहयोग कर सकते हैं। ६. वयोवृद्ध विद्वान् व संन्यासी एवं महान् वैज्ञानिक महानुभाव अपना आशीर्वाद रूपी सहयोग करने की कृपा कर सकते हैं।

कृपया आप अपना चैक/ड्राफ्ट/धनादेश, प्रमुख, श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास, के नाम (केवल खाते में देय) भेजने का कष्ट करें। न्यास को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा ८० के अन्तर्गत छूट प्राप्त है। पंजाब नेशनल बैंक के खाता संख्या ४४७४०००१००००५८४९ में ऑन लाइन आप धन जमा करवा सकते हैं- परन्तु इसकी सूचना तुरन्त हमें फोन द्वारा अवश्य देने की कृपा करें।

श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास, वेद विज्ञान मन्दिर, भागल-भीम

वाया—भीनमाल, जिला जालोर (राजस्थान) पिन 343029

-: न्यास के आधार :-

१. संरक्षक-पूज्य आचार्य स्वदेशजी महाराज, वेद मन्दिर, मथुरा
२. सह संरक्षक पुज्य आचार्य राजसिंहजी आर्य, दिल्ली
३. संस्थापक-आजीवन-प्रमुख एवं आचार्य-पूज्य आचार्य अग्निव्रतजी नैष्ठिक
४. मानद सहयोगी संरक्षकगण :-
   (क) मा. श्रीमान् अर्जुनसिंहजी देवड़ा विधायक (रानीवाड़ा) एवं उपाध्यक्ष बीसूका क्रियान्वयन समिति, राजस्थान सरकार, जयपुर
   (ख) मा. श्रीमान् डॉ. समरजीतसिंहजी, विधायक, भीनमाल
   (ग) मा. श्रीमान् गोपालसिंहजी, कोरी
   (घ) मा. श्रीमान् जोगेश्वरजी गर्ग, विधायक, जालोर

(ङ) मा. श्रीमान् नारायणसिंहजी देवल, पूर्व जिला प्रमुख, जालोर

(च) मा. श्रीमान् जीवारामजी चौधरी, विधायक, सांचोर

(छ) मा. श्रीमान् भवानीसिंहजी, बाकरा

(ज) मा. श्रीमान् एडवोकेट ठाकरारामजी चौधरी, पूर्व जिला प्रमुख, जालोर

५. सहयोगी संरक्षकगण :-

(क) श्रीमान् चौधरी तोरनसिंहजी आर्य, मथुरा

(ख) श्रीमान् सत्यपालजी आर्य, भटिण्डा

(ग) श्रीमान् रघुवीरसिंहजी चौधरी (आर्य), मथुरा - २००९ तक

-: कार्यकारिणी सदस्य (न्यासी मण्डल) :-

१. श्रीमान् आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक, वेद विज्ञान मन्दिर, भागलभीम ।
२. श्री ऊकसिंह चौहान, झाब, जालोर ।
३. श्री अभिषेक आर्य, निम्बावास, जालोर ।
४. श्री जनकसिंह चम्पावत, जेरण, जालोर ।
५. श्री डॉ. पदमसिंह चौहान, कुशलापुरा, जालोर ।
६. श्री धीराराम चौधरी, विशाला, जालोर ।
७. श्री रमेश सुथार, खाण्डादेवल, जालोर ।
८. श्रीमती माता प्रकाशदेवी, फरीदाबाद (हरियाणा)
९. श्री बलवीरसिंह मलिक, फरीदाबाद (हरियाणा)
१०. श्री ब्र. नरेन्द्र जिज्ञासु, आजमगढ़ (उ. प्र.)
११. श्री पूनमचन्द नागर, अहमदाबाद ।
१२. श्री सुरेशचन्द्र वंशीधरजी अग्रवाल, अहमदाबाद ।
१३. श्री जयसिंह गहलोत, जोधपुर ।
१४. श्री किशनलाल गहलोत, जोधपुर ।

१५. श्री सोमेन्द्रसिंह गहलोत, जोधपुर ।

१६. श्री मनोहरलाल आनन्द, फरीदाबाद (हरियाणा) ।

१७. श्री भुवनेश काबरा, पाली ।

१८. श्री नटवर नागर, सुमेरपुर (पाली)

१९. सुश्री ब्र. इन्दुबाला आर्या, हरिद्वार (उत्तरांचल) ।

२०. श्री जितेन्द्रसिंह सिसोदिया, कुचामन सिटी, नागौर ।

२१. श्री राजेन्द्रसिंह सोढ़ा, तातोल, जालोर ।

२२. श्री मूलसिंह चौहान, चौरा, जालोर ।

२३. श्री महेन्द्रसिंह चम्पावत, जेरण, जालोर ।

२४. श्री हुकुमसिंह देवड़ा, सुरावा, जालोर ।

२५. श्री विक्रमसिंह राव, लेटा, जालोर ।

२६. श्री पं. विपिन बिहारी आर्य (न्यासी), मथुरा (उ. प्र.) ।

२७. श्री कमलेश रावल, सुमेरपुर, पाली ।

२८. श्री रामनिवास जांगिड़, पाली ।

२९. श्री रघुवीरसिंह चौधरी, मथुरा (उ. प्र.) ।

३०. श्री चन्द्रशेखर लाहोटी, कड़ैल, अजमेर ।

३१. श्री महेश बागड़ी, पाली ।

३२. श्री नरसिंह आर्य, पाली ।

३३. श्री मोक्षराज आर्य, अजमेर ।

३४. श्री मांगीलाल सोनी, भीनमाल ।
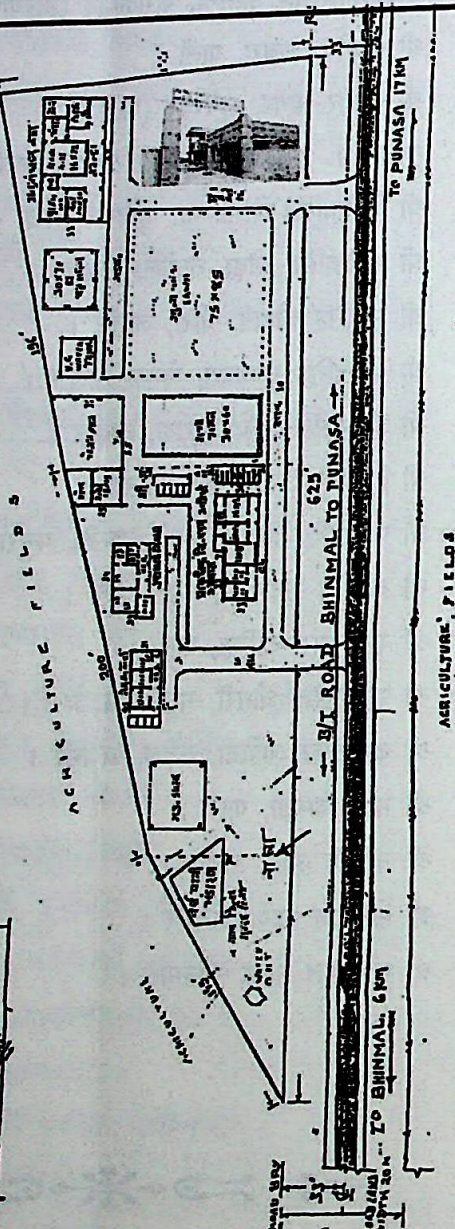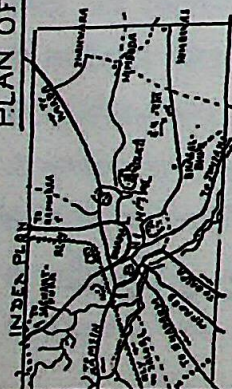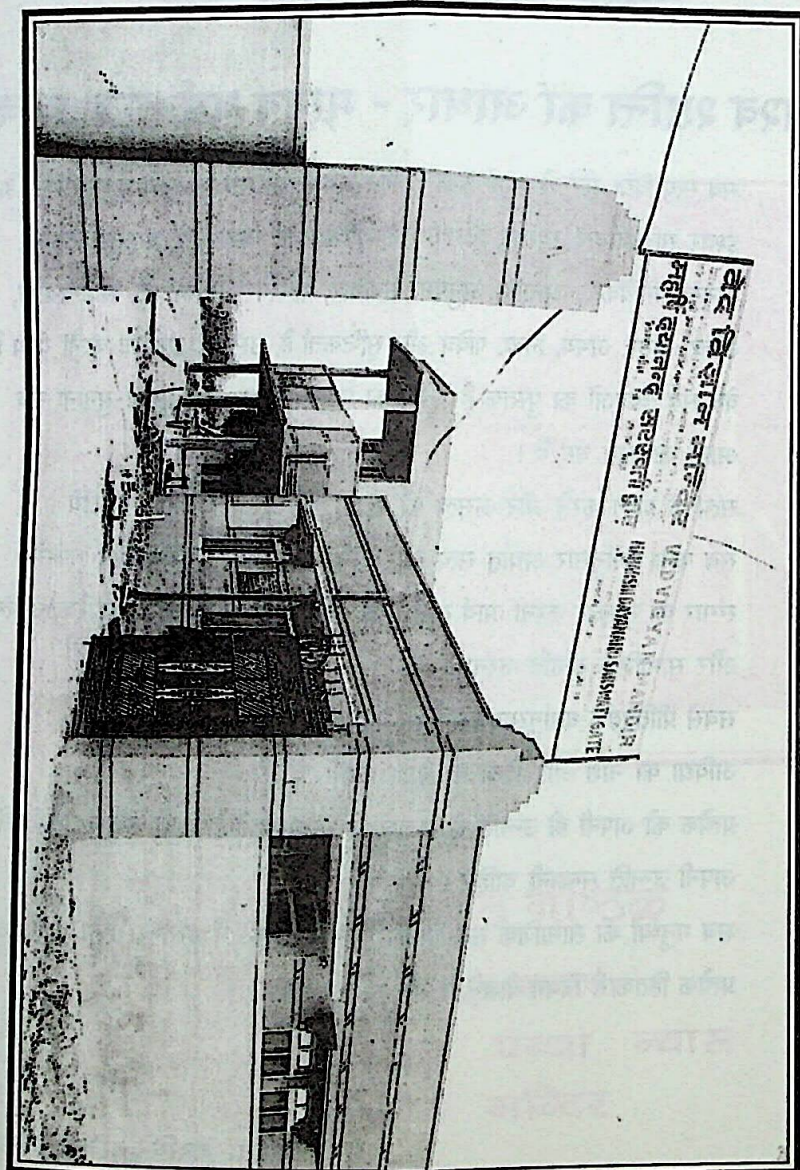
वर्तमान में निर्मित भवन

विश्व शान्ति का आधार - मानव धर्म-सूत्र दशक

१. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।

२. ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकर, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

३. वेद सब विद्याओं का पुस्तक है । वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है ।

४. सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये ।

५. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिये ।

६. संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना ।

७. सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिये ।

८. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये ।

९. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए ।

१०. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्व हितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम पालने में सब स्वतन्त्र रहें ।

प्रणेता-महर्षि दयानन्द सरस्वती
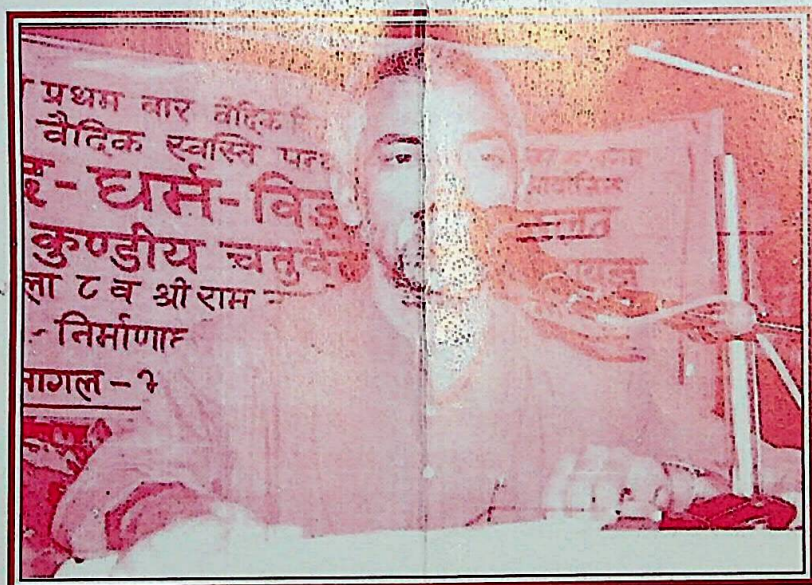
आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

संस्थापक, प्रमुख एवं आचार्य

श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास
वेद विज्ञान मन्दिर

इसके प्रकाशन में निम्नानुसार सहयोग प्राप्त हुआ

श्री मांगीलाल सोनी

(न्यासी-श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास)

बड़ा चौहटा, भीनमाल – 3000/– रू.

श्री जगदीश सोनी

पुत्र श्री मांगीलालजी सोनी

(दासपां वाले), भीनमाल – 2000/– रू.

श्री सुरेश नामा

पुत्र श्री सांवलारामजी नामा

भीनमाल – 1000/– रू.

शेष व्यय न्यास ने वहन किया।

चामुण्डा प्रिन्टर्स, भीनमाल फोन 220104